चन्दामामा
दिसम्बर १९९६
Rs
6

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स

डायमण्ड कॉमिक्स प्रस्तुत करते हैं

प्राण
रमन और रावण

प्राण
चाचा चौधरी
राका की तबाही

पोस्टमार्टम
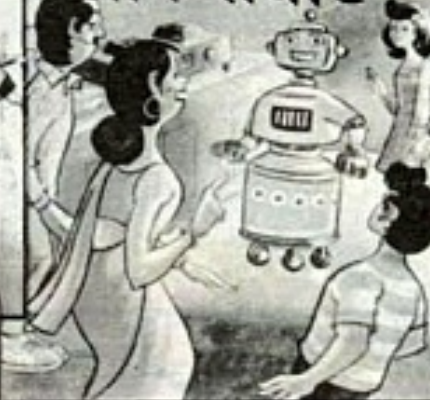
ताऊजी और
पिस्सु डंक

नई अमर चित्रकथायें (मूल्य प्रत्येक 15/-)

- कृष्ण • हनुमान • कृष्ण और जरासंध • कृष्ण और रुक्मणि
- हरिश्चन्द्र • चन्द्रगुप्त मौर्य • शकुन्तला • विवेकानन्द
- गुरु गोबिन्द सिंह • गुरु तेग बहादुर

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचायें रु. 200/- वार्षिक

अंकुर बाल बुक क्लब घर बैठे डायमण्ड कॉमिक्स पाने का सबसे सरल तरीका है। आप गांव में हैं या ऐसी जगह जहाँ डायमण्ड कॉमिक्स नहीं पहुंच पाते। डाक द्वारा वी.पी.पी. से हर माह डायमण्ड कॉमिक्स के 6 नये कॉमिक्स पायें और मनोरंजन की दुनिया में खो जायें साथ ही ढेरों इनाम पायें।

हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर **4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-)** लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।

1 वर्ष में महीने	बचत (रु.)	कुल बचत (रु.)
12	4/- (छूट)	48.00
12	7/- (डाक व्यय)	84.00
1	48/- (13वीं वी.पी. फ्री)	48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक 'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री		20.00
		200.00

सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और सदस्यता शुल्क के 10 रु. डाक टिकट या मनी आर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होंगी।

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

____

डाक __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्म दिन ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

डायमण्ड राशिफल 1997 12 राशियां अलग-अलग पुस्तकों में (मूल्य प्रत्येक राशि 10/-)

डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

दिसंबर १९९६

एक प्रति : ६.००

वार्षिक चंदा : ७२.००

RUF
AND
TUF
TM
A QUALITY PRODUCT FROM ARVIND MILLS
JUNIOR
सिलाई-के-लिये-तैयार जीन्स

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

बच्चों के अधिकारों की रक्षा

एक और बाल-दिवस आया और गया। यथावत् बच्चों ने जुलूस निकाले, अनेकों प्रकार की स्पर्धाएँ चलीं और मनोरंजन के कितने ही कार्यक्रम संपन्न हुए। प्रश्न तो यह है कि ये सब कार्यक्रम क्या एक ही दिन तक सीमित रहें और इसे बाल-दिवस कहकर इसके साथ ऐसा न्याय करें ?

इसका क्या यह मतलब है कि बाकी दिनों में बच्चों की ओर ध्यान न दिया जाए? छे-सात सालों के पहले दुनिया ने अचानक महसूस किया कि वयस्कों की तरह बच्चों के भी अपने अधिकार हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने बच्चों के अधिकारों को लेकर एक विशिष्ट समावेश का आयोजन किया और हर देश से मांग की गयी कि समावेश के प्रस्तावों को स्वीकार करें और उन्हें कार्यान्वित करें।

एक महीने के पहले संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के प्रतिनिधि ने जो मांग की, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। संघ में भाषण देते हुए प्रतिनिधि ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ एक और समावेश का आयोजन करे, जिसमें मालूम किया ज़ाए कि १९८९ के समावेश में पारित कितने प्रस्तावों को कितने देशों ने कार्यान्वित किया। भारत के प्रतिनिधि ने यह भी कहा कि ऐसे समावेश पाँच सालों में एक बार अवश्य संपन्न हों।

अब भारत की स्थिति का अवलोकन करें। बच्चों के अधिकारों में से दो बुनियादी अधिकार हैं- शिक्षा-प्राप्ति का अधिकार, अनिवार्य मज़दूरी से स्वच्छंद होने का अधिकार। १९८६ में 'चैल्ड लेबर याक्ट' भारत में पारित हुआ, जिसके अनुसार किसी भी बालक या बालिका को किसी भी मजदूरी पर न लगाया जाए। किन्तु वास्तव में इस दिशा में ठोस क़दम उठाये नहीं गये हैं।

जब कि अपने ही देश में कानून सही रूप में लागू नहीं हो रहे हों तो भला हम विश्व संस्था से इनकी रक्षा की आशा कैसे कर सकते हैं।

वर्ष : ४७ दिसंबर १९९६ अंक : ३

एक प्रति : रु. ६/- वार्षिक चन्दा : रु ७२/-

A POLIO-FREE INDIA!

The goal gets nearer!
Take the next step on
National Immunisation Days:

December 7, 1996
January 18, 1997

CALLING PARENTS!

Even if

* the child is indisposed or has diarrhoea
* the child had been given polio drops earlier

TO ENSURE CENT PER CENT PROTECTION

Remember to

Take your children (under 5) to the nearest immunisation booth / centre to receive **TWO ADDITIONAL DROPS OF THE ORAL POLIO VACCINE on National Immunisation Days**

The future of the country
depends on the future of
our healthy children

**LET US STRIVE
TOWARDS CREATING
A POLIO-FREE INDIA
BY 2000 A.D.**

समाचार-विशेषताएँ

नोबेल शांति पुरस्कार

टैमोर इंडोनेशिया के समीप का ही छोटा-सा द्वीप है। यह द्वीप अब भी अशांत ही है। फिर भी इस द्वीप के निवासी स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए बराबर लड़ते आ रहे हैं। यहाँ शांति की स्थापना के लिए अहिंसा के मार्ग पर चल रहे हैं और अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यहाँ के ऐसे दो नेताओं को इस वर्ष का शांति पुरस्कार दिये जाने की घोषणा हो चुकी है। यद्यपि टैमोर के बिषप कार्लोस फिलिप बेलो प्रवास जीवन बिता रहे हैं, फिर भी वे अपने द्वीप की स्वतंत्रता के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। जोस रोमोस होर्ता पूरबी टैमोर के सर्वमान्य नेता हैं।

लगभग पाँच शताब्दियों से पूरबी टैमोर द्वीप पुर्तगालियों के अधीन है। द्वितीय युद्ध के उपरांत संसार से उपनिवेश की पद्धति समाप्त होने लगी। तब से टैमोर की प्रजा भी अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने लगी। इस लड़ाई ने १९७५ तक तीव्र रूप धारण किया। सत्ता-परिवर्तन की किसी व्यवस्था के बिना ही पुर्तगाली शासकों ने हठात् द्वीप से चले जाने का निर्णय लिया। स्वतंत्रता की लड़ाई में जुटे वाम पक्ष संस्था 'फ़्रिटेलिन' ने राजधानी दिली से स्वतंत्रता की घोषणा की। परंतु इंडोनेशिया ने पूरबी टैमोर को स्वतंत्र देश मानने से इनकार किया। 'फ़्रिटेलिन' के विरुद्ध लड़ने के लिए उसने अपनी सेनाएँ भेजीं। तब वहाँ जो लड़ाई हुई, उसमें लगभग टैमोर की २,००,००० प्रजा मरी। १९७६, जुलाई में इंडोनेशिया ने उस द्वीप को अपना २७वाँ राज्य बना लिया।

फिर भी, अब तक संयुक्त राष्ट्र संघ ने पूरबी टैमोर को इंडोनेशिया में सम्मिलित राज्य के रूप में स्वीकार नहीं किया, उसे मान्यता नहीं दी।

१९९१, नबंवर, १२ को राजधानी दिली में मानव हकों से संबंधित एक कार्यकर्ता की मृत्यु के संदर्भ में शोक सभा का आयोजन हुआ। उस शोक सभा में क़रीबन तीन हज़ार लोगों ने भाग लिया। उनपर इंडोनेशिया की सेनाओं ने बंदूकें चलायीं, जिसके कारण पचास से अधिक लोग मर गये। उसके बाद 'फ़्रिटेलिन' के नेता समामा गुस्मावो को जेल में डाल दिया। अब तक रिहा नहीं हुए।

टैमोर के नेता रोमोस होर्ता ने १९७५ में देश छोड़ा और स्वच्छंद प्रवास जीवन व्यतीत करने लगे। देश के बाहर रहकर अपने देश की स्वतंत्रता के लिए वे निरंतर कृषि कर रहे हैं। वे बहुत सालों तक संयुक्त राष्ट्रसंघ में पूरबी टैमोर के अनधिकारी प्रतिनिधि बनकर रहे। संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने देश को अब्जर्वर का भी स्तर नहीं दिया, इसलिए उन्होंने न्यूयार्क छोड़ दिया और तब से आस्ट्रेलिया में रहने लगे। वे तब से वहाँ पूरबी टैमोर के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में रह रहे हैं।

इंडोनेशिया संसार का सबसे बड़ा मुस्लिम देश है। पूरबी टैमोर में लगभग अस्सी प्रतिशत आबादी ईसाई धर्म की है। १९८३ में बिषप बेलो वहाँ गये। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ को पत्र लिखा कि जब इंडोनेशिया उस द्वीप से अपने को हटा लेगा, तब इस विषय पर जनता का अभिप्राय जाना जाए। इस विषय में संयुक्त राष्ट्र संघ से किसी उत्तर के मिलने के पहले ही बिषप के अभिप्राय का समर्थन करनेवाले बहुत-से समर्थकों को इंडोनेशिया के अधिकारियों ने जेल में ठूँस दिया। उन दिन से पूरबी टैमोर से बिषप बेलो और विदेश में रहते हुए रोमोस होर्ता पूरबी टैमोर की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं; न्यायोचित शांतिपूर्ण परिष्कार के लिए प्रयास कर रहे हैं। उनकी स्वार्थरहित कृषि को दृष्टि में रखते हुए गौरवशाली नोबेल शांति पुरस्कार उन्हें प्रदान किये गये।

विष्णुभट्ट की कहानी

यद्यपि चंदनपुर का दरबार छोटा-सा दरबार था, पर दरबार के अधिपति कमलचंद्र, कवियों और पंडितों का आदर करता था। उसने बहुत नाम भी कमाया। युवक मुरलीनाथ दरबार के बड़े कवियों में से एक था। अपनी कविता तथा वाक्चातुर्य के कारण वह कमलचंद्र का प्रीति-पात्र बना। कह सकते हैं कि वह उसके सन्निहित व्यक्तियों में से एक था। अन्य कवि इस कारण उससे जलते थे। मुख्यतया आयु व लोक-अनुभव में अधिक दो-तीन कवि उससे बहुत ही ईर्ष्या करने लगे।

युवक मुरलीनाथ का विवाह अभी-अभी हुआ और उसने परिवार बसाया। गौरीपुर गाँव चंदनपुर से छे कोस की दूरी पर था। रामचंद्र नामक पंडित उसी गाँव का निवासी था। गोदादेवी उसकी इकलौती पुत्री थी, जिसका विवाह मुरलीनाथ से संपन्न हुआ।

थोड़े ही दिनों में गोदादेवी ने अपने पति मुरलीनाथ के आंतरिक गहराइयों को जाना तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। मुरलीनाथ भावुक व मंजा हुआ कवि था, पर स्त्रीयों के प्रति उसका दृष्टिकोण बहुत ही हीन था। इस सत्य को जानने के पहले उसने एक-दो बार पति की कविता-रचना में दख़लंदाजी की। मुरलीनाथ ने उसे डाँटा और वहाँ से भेज दिया।

यों दिन गुज़रते गये। धनुर्मास आया तो गोदादेवी का पिता पंडित रामचंद्र उसे मायके ले आने आया। धनुर्मास के उत्सव उसके घर में बड़े पैमाने पर मनाये जाते थे। मुरलीनाथ ने ससुर का निमंत्रण स्वीकार करते हुए कहा कि आप अपनी पुत्री को अभी ले जाइये और मैं स्वयं उत्सव के अवसर पर उपस्थित हो जाऊँगा। गोदादेवी अपने पिता के साथ सहर्ष मायके

गजानन शर्मा

चली गयी।

गोदादेवी के चले जाने के तीसरे दिन, यथावत् दरबार में कवितागान का कार्यक्रम चल रहा था। मुरलीनाथ प्रकृति की रमणीयता को लेकर अपनी कविता सुनाने लगा। बहुत ही भावुक मुरलीनाथ जब अपनी कविता सुना रहा था, तब कमलचंद्र ने अकस्मात् उसे रोका। उसने कहा "युवकवि, जब से आपका परिचय हुआ है, तब से आपकी कविता पर ध्यान दे रहा हूं। सदा आप प्रकृति का ही वर्णन करते रहते हैं। किन्तु उस भगवान के साक्षात् प्रतिनिधि, इस भूमि के शासक की प्रशंसा करते ही नहीं। इस प्रकृति के जीव राशियों को प्रशांत रखने का भार व जिम्मेदारी राजा पर है। और राजा इस कार्य-भार को बड़ी ही जिम्मेदारी के साथ संभालता है, इसके लिए बहुत परिश्रम करता है। उसकी प्रशंसा तो आप करते ही नहीं। कम से कम उसका नाम भी नहीं लेते। हम राजवंशजों को भुला देने का कोई सबल कारण हो तो बताइये।"

अकस्मात् ही पूछे गये कमलचंद्र के प्रश्न ने मुरलीनाथ को अवाक् कर दिया। बहुत प्रयत्न किया किन्तु वह कमलचंद्र को उत्तर नहीं दे पाया। इसका कारण था, उसकी अंतरात्मा।

धनार्जन के लिए ही मुरलीनाथ राजा की सेवा कर रहा था। राजाओं के प्रति थोड़ा-बहुत द्वेष उसकी अंतरात्मा में था। उसका गहरा विश्वास था कि चाहे राजा कितने ही आदर व अभिमान से व्यवहार

करें, पर उनकी आत्मा अहंकार- पूरित होती है।

मुरलीनाथ का प्रगाढ़ विश्वास था कि शरण में आये शत्रु को भी क्षमा करने की शक्ति केवल एकमात्र उस भगवान में है। इसी कारण वह भगवान और उससे सृजित सृष्टि की संपदा प्रकृति की रमणीयता पर ही कविताएँ रचता रहता था।

घबराये हुए मुरलीनाथ ने जब राजा के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो वयोवृद्ध कवि गंगाभट्ट ने धीरे से व्यंग्य-भरे स्वर में कहा "प्रभू, इतने सरल प्रश्न का उत्तर मुरलीनाथ नहीं दे सका, इसका कारण हो सकता है, राजाओं के प्रति उसकी उदासीनता, सद्भाव का लोप।"

गंगाभट्ट की बातें सुनते ही कमलचंद्र

के मुख पर आवेश और आग्रह फैल गये। उसने कड़ुवे स्वर में कहा ''युवकवि, जीविका के लिए अपना मन मसोसकर ऐसा व्यवहार करने की कोई आवश्यकता नहीं। कल से तीनों वक्त आपके लिए आवश्यक भोजन व सुविधाओं का प्रबंध होगा। आराम से आप घर पर ही रहिये और अपनी इच्छा व अभिरुचि के अनुसार कविताएँ रचते रहियेगा।''

कमलचंद्र ने ऐसा कहकर भरी सभा में मुरलीनाथ का घोर अपमान किया। यह अपमान उससे सहा नहीं गया। परंतु करे क्या ? उस क्षण उसने राजा को अपनी तरफ़ से कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया लेकिन नमस्कार करके, सिर झुकाकर बाहर चला आया।

उस क्षण से मुरलीनाथ खोया-खोया रहने लगा। रातों में नींद भी नहीं आती थी।

हर दिन राजभवन से तीनों बार भोजन-पदार्थ क्रमपूर्वक आते रहते थे। वे उसे विष की तरह लगने लगे। निद्राहार के न होने से, मानसिक रूप से घायल होने के कारण एक ही सप्ताह में बीमार आदमी की तरह लगने लगा। वह एकदम दुबला-पतला हो गया।

इस स्थिति में, मुरलीनाथ एक दिन सबेरे ही घर से निकल पड़ा। वह लक्ष्य हीन हो पैदल जाता गया और गाँव की सरहदों को पार करके बेहोशी की स्थिति में एक पेड़ के नीचे जा बैठा। इर्द-गिर्द फलों के बाग़ थे। उनके बीच छोटा नाला बह रहा था। पेड़ों से शीतल बयार धीमी गति से चल रही थी। इस आह्लादकारी वातावरण ने कुछ हद तक उसके उद्वेग को कम किया। राजा की अपमानजनक बातों से नीरस हुए मुरलीनाथ में धीरे से आत्मविश्वास जगने लगा, नया-नया श्वास लेने लगा। नवोत्साह के उत्पन्न होने के बाद भी वह इस निर्णय पर नहीं आ पाया कि फिर से कमलचंद्र की कृपा-दृष्टि उसपर कैसे पड़ सकती है।

उस समय एक नवयुवक आया और उसे प्रणाम किया। मुरलीनाथ ने उससे पूछा कि आप कौन हैं ?

युवक ने हँसते हुए कहा ''मुझे विष्णुभट्ट कहते हैं। हमारा घर गोदादेवी के घर के बग़ल में ही है। आपको आपके विवाह के

समय देखा था ।''

मुरलीनाथ सिर हिलाकर चुप रह गया । ''सुना कि धनुर्मास के समय आपका कविता-गान होगा । गोदा दीदी ने मुझसे कहा तो मुझसे रहा नहीं गया और मैं राजस्थान से चला आया । किन्तु यह मेरी समझ के बाहर है कि आप इस समय यहाँ क्यों हैं ?'' युवक ने पूछा ।

मुरलीनाथ की समझ में नहीं आया कि क्या कहूँ । तो विष्णुभट्ट ने फिर पूछा ''लगता है, आप बहुत आशांत हैं । क्या कोई ऐसी घटना घटी, जिसके कारण आप इतने अशांत और कमज़ोर दीख रहे हैं ।''

विष्णुभट्ट के आदर की भावना से भरे प्रश्न को सुनकर मुरलीनाथ को लगा कि उससे सब कुछ कह डालूँ । बताना ही पड़ेगा, क्योंकि विष्णुभट्ट आया, उसकी कविता सुनने के लिये ही ।

मुरलीनाथ से पूरा विषय जानने के बाद विष्णुभट्ट ने मुस्कुराते हुए कहा ''आपकी समस्या के परिष्कार के लिए मैं एक उपाय बता सकता हूँ ।'' मुरलीनाथ ने बड़ी आतुरता से कहा ''कहो, क्या उपाय है ।''

''पहले राजाओं के प्रति आपका जो दृष्टिकोण है, उसे बदल डालिये । जब राजा होकर कोई जन्म लेता है, उसमें थोड़ा-बहुत राज-दर्प तो होगा ही । किन्तु इतिहास में ऐसे बहुत से राजा हैं, जिन्होने पंडितों और कवियों को मान दिया, उन्हें उच्च आसन पर बिठाया और आप जैसे सरस्वती पुत्रों के पाँव धोये । कवि और

पंडितों को उन्होने साक्षात् शारदा मूर्ति के रूप में देखा । उनको पालकी में बिठाकर स्वयं ढोया । यह नग्न सत्य आपसे छिपा नहीं है ।'' विष्णुभट्ट ने बड़े गंभीर स्वर में कहा ।

उसकी बातों में निहित सत्य को माना मुरलीनाथ ने । आत्मपरिशीलन करते-करते उसका सिर थोड़ा-सा झुक भी गया ।

उसमें हुए परिवर्तन को देखकर विष्णुभट्ट ने बड़े ही मृदुल स्वर में भावों से भरी एक आशु कविता सुनायी, जिसका अर्थ यों है :

यमुना की रेतीली वेदिका पर बैठकर मुरलीधर कृष्ण मधुर वेणुगान कर रहा था । उसके मुरली नाद पर मुग्ध यमुना नदी आनंदित होकर, उत्साहित होकर उमड़ती हुई प्रवाहित होने लगी । किन्तु

यमुना को और सुरीला व मधुर लगा। इस कारण उसका आनंद उमड़ता गया और मुरलीधर तक पहुँचने के लिए उमड़-उमड़कर प्रवाहित होने लगी। यमुना नदी की तरह गंभीर मनवाले उस कमलचंद्र भूपति को, वह मुरलीधर सदा प्रेम-दृष्टि से देखता रहे।''

यमुना नदी के किनारे ही बाँस की जो दो झाड़ियाँ थीं, उनमें से कुछ बाँसें मुरलीनाथ के हाथ की मुरली के मधुर नाद को सुनकर ईर्ष्या से जली जा रही थीं। यह तो स्पष्ट है कि यह मुरली उन्हीं की जात की बाँस से बनी है। वे चाहतीं थीं कि इस मुरली की ध्वनि में रुकावट डालें और यमुना की दृष्टि अपनी ओर घुमा लें। इस पगली इच्छा को लेकर वे इधर-उधर हिलने-डुलने लगीं और बेताल रागहीन ध्वनियाँ पैदा करने लगीं। इन ध्वनियों से यमुना पहले क्रोधित हुई। पर वह बाँसों के ईर्ष्यालु स्वभाव को देखकर उनकी बुद्धिहीनता पर हँस पड़ी। बाँसों के किये गये बेसिर-पैर की ध्वनियों को सुनने के बाद मुरलीधर का मुरलीगान

विष्णुभट्ट की कविता सुनकर मुरलीनाथ ने तालियाँ बजायीं। उसने कहा ''शाबाश विष्णुभट्ट, मेरे मन के किसी कोने में इस बात का गर्व है कि प्रकृति-वर्णन में मेरी बराबरी का कोई कवि है ही नहीं, पर अव वह गर्व चकनाचूर हो गया। आज के बाद उसका कोई स्थान नहीं। बहुत ही सुँदर शैली में तुमने अपने भाव व्यक्त किये। कविता अद्‌भुत है।'' हँसते हुए उसने विष्णुभट्ट की भुजा थपथपायी और जी भरके उसकी प्रशंसा की। विष्णुभट्ट ने नम्रतापूर्वक सिर झुकाया और कहा ''यह कविता जन्मी, आप ही के लिए।''

''यह तो मैं देख ही रहा हूँ। तो क्या इसका यह अर्थ हुआ कि मुझसे ईर्ष्या करनेवाले कवियों ने राजा के कान भरे?'' मुरलीनाथ ने सोचते हुए सवाल किया।

''हाँ, दीदी ने कहा था कि गंगाभट्ट आपसे ईर्ष्या करते हैं। अगर ईर्ष्या नहीं होती तो भरी सभा में अपने ही साथी कवि के अपमान का कारण बनते? राजा के संदेह का समर्थन करते?'' विष्णुभट्ट ने पूछा। ''तुमने जो कहा, सौ फ़ी सदी सच है। इतने कवियों से भरी सभा में राजा ने जब ऐसे कड़ुवे स्वर में मेरे बारे में कहा

तो मेरी बुद्धि सठिया गयी। क्या तुम्हारी सुनायी कविता उन्हें सुनाऊं ? कहो, तुम्हारा क्या विचार हैं?'' मुरलीनाथ ने पूछा।

''हाँ, ज़रूर सुनाइये। किन्तु अपना वेष बदलिये और जब राजा एकांत में हों, तब उन्हें यह कविता सुनाइये। कविता की अंतिम पंक्तियों से यह भाव स्पष्ट होता है कि राजाओं के प्रति आपके हृदय में कोई द्वेष या विरोध की भावना नहीं है। साथ ही यह भी स्पष्ट गोचर होता हैं कि शेष कवि आपसे जलते हैं, पर आप हैं, जो राजा की कृपा, प्रेम व सान्निध्य की इच्छा रखते हैं।'' विष्णुभट्ट की बातों को मुरलीनाथ ने तुरंत स्वीकार नहीं किया। वह संदिग्धावस्था में पड़ गया।

विष्णुभट्ट ने यह भाँपा और कहा ''आप इस सोच में मत पड़िये कि किसी पराये कवि की कविता को अपनी कैसे बना लूँ। जिस प्रकार आपने मेरी दीदी को स्वीकारा, उसी प्रकार इस कविता-कन्या को भी स्वीकार कीजिये।''

फिर भी मुरलीनाथ का आत्माभिमान दीवार बनकर खड़ा था। इतना सब कुछ बताया, विनती की, समझाया, फिर भी मुरलीनाथ ने अपनी स्वीकृति नहीं दी तो विष्णुभट्ट निराश हुआ। वह क्षण भर सोचने लगा कि उसे कैसे मनाना चाहिये।

उपरांत, हिचकिचाते हुए, अपने सिर पर बंधी पगड़ी और कोमल-कोमल मूँछे निकाल दीं। दूसरे ही क्षण स्तब्ध मुरलीनाथ ने देखा कि गोदादेवी उसके सामने मुस्कुराती हुई खड़ी है और उसके लंबे-लंबे केश सिर से फिसल चुके हैं।

उसके मुँह से एकाएक निकला ''गोदा, तुम !'' गोदादेवी ने मुस्कुराते हुए कहा ''हाँ स्वामी''। एक क्षण तक वह पुरुष स्वर में बोलती रही, फिर उसने अपने सहज कोमल स्वर में कहा ''नगर से लौटे मेरे पिता के दो शिष्यों द्वारा मालूम हुआ कि भरी सभा में आपका अपमान हुआ और आप सिर झुकाकर सभा से बाहर आ गये। यह सुनकर एक क्षण भर भी मैं चुप नहीं रह सकी। मैं स्वयं आकर आपको सलाह दूँ तो आप माननेवालों में से नहीं हैं। इसीलिए इस पुरुष वेष में आयी। नित्संकोच ही, इस कविता के द्वारा आप अपनी समस्या का परिष्कार कर सकते

हैं ।''

मुरलीनाथ आश्चर्य में डूबा उसकी बातें सुन रहा था । कुछ क्षणों के बाद अपने को उसने संभाला और नकारात्मक भाव में अपना सिर हिलाया ।

इतना सब कुछ समझाने-बुझाने के बाद भी पति की अस्वीकृति से असंतुष्ट गोदादेवी ने दुख और आवेश-भरे स्वर में पूछा ''क्यों स्वीकार नहीं करते?''

मुरलीनाथ ने क्षण भर मौन धारण करके कहा ''स्त्री के प्रति अवहेलना की भावना, राजाओं के प्रति उदासीनता, भरी सभा में हुआ मेरा अपमान, ये तीनों मेरे अंतराल की गहराई में गड़ गये हैं । ये तीनों काँटों से भरे घने वृक्ष हैं । इन तीनों को एक ही बाण से तुमने काट दिया । मेरे मन में प्रकृति की प्रशांति भरनेवाली साक्षात् सत्यभामा हो । अब मेरे सम्मुख एक ही मार्ग है । वह है, अपने अहंकार को त्यजूँ और हृदयपूर्वक तुम्हारे सामने सिर झुका लूँ । ऐसा करने पर ही मैं अपने को तुम्हारा कृतज्ञ सिद्ध कर पाऊँगा, तुम्हारा ऋण चुका पाऊँगा ।'' कहकर वह उठा और अपनी पत्नी के पाँव छूने लगा ।

पति में आये आमूल परिवर्तन को देखकर गोदादेवी की आँखों में आनंद भरे आँसू उमड़ पड़े और झुककर उसे ऐसा करते हुए रोककर बोली ''नहीं, ऐसा मत कीजिये । आपने मेरी बातें मानीं, यही मेरे लिए सब कुछ है ।''

उसके बाद पति-पत्नी ने कुछ समय तक वहीं प्रकृति-सौंदर्य को निहारा और वहाँ से राजधानी पहुँचे ।

दूसरे ही दिन मुरलीनाथ बहुरूपिये के वेष में राजा से मिला और गोदादेवी की सुनायी कविता सुनायी । अपने प्रयास में सफल मुरलीनाथ फिर से राजा कमलचंद्र का प्रीति-पात्र बना ।

कुछ दिनों के बाद उसने राजा को अपनी पत्नी गोदादेवी के किये प्रयत्नों के विवरण दिये । बड़े ही गर्व से उसने बताया भी कि मेरी पत्नी कितनी बड़ी विदुषी है ।

तब से मुरलीनाथ ने गोदादेवी के सहयोग से कितने ही उत्तम काव्य रचे । किन्तु उन सब काव्यों पर यही लिखा- विष्णुभट्ट विरचित ।

१७

(पद्ममुखी ने निश्चय कर लिया और घोषणा भी कर दी कि जो युवक उससे विवाह करने की इच्छा रखता है, उसे चाहिये कि वह अपने पति के बाण की डोरी चढ़ा सके और उसके पति की ही तरह बारहों कुल्हाड़ियों के सिरों के बीच में से होते हुए निशाना बेध सके। वृद्ध भिखारी के रूप में आये अपने पति से उसने यह बात कही, क्योंकि उसे वह पहचान नहीं पायी। दूसरे दिन यही बात उसने उसके घर में बैठकर मौज-मस्ती करनेवाले युवकों से भी कही। रूपधर का धनुष बाण उनके सामने रखे।) बाद

एक-एक करके आने लगे और धनुष की डोरी को चढ़ाने के प्रयत्न में विफल होते रहे। यह देखकर दुर्बुद्धि ने काली को बुलाया और उससे कहा "अरे, इस धनुष पर चर्बी चढ़ाओ और आग पर सेंको।" काली ने यह काम किया, किन्तु उससे कोई फ़ायदा नहीं हुआ। जब वे दुष्ट धनुष को लेकर बहुत ही परेशान थे, जब उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये तब सुवरों का रखवाला व पशुपालक बाहर गये। रूपधर भी बाहर गया। उसने उन्हें अपने पास बुलाकर धीमे स्वर में कहा "मैं जो कहने जा रहा हूँ, ध्यान से सुनो। अगर आपका यजमान रूपधर आ जाए तो उसके लिए आप क्या करेंगे? जो दुष्ट हैं, क्या उनका विरोध करोगे, उनसे लड़ोगे और अपने यजमान का साथ दोगे? अपने मन की बात साफ़-साफ़ कहो।"

जब उन्होंने क़सम खायी कि हम अपने यजमान के लिए अपने प्राण भी न्योछावर

कमरों में चली जाएँ और दरवाज़े बंद कर लें। उन्हें सावधान करो कि गड़बड़ी हो भी जाए तो वे बाहर न निकलें। सुखप्राप्ति, तुम्हें बाहर जाकर सिंहद्वार को बंद करना होगा।''

फिर तीनों एक-एक करके अंदर आये। अपने-अपने स्थानों पर बैठ गये। उस समय विपुलयोद्धा धनुष पर अपना बल-पराक्रम दिखा रहा था। डोरी चढ़ाने का असफल प्रयत्न कर रहा था। उसे झुकाना उससे नहीं हो रहा था। निराशा-भरे स्वर में कराहते हुए कहने लगा ''हम कितने अभागे हैं। शादी की बात छोड़िये। शादी करनी ही हो तो इथाका में और बहुत-सी कन्याएँ हैं। मुझे तो इस बात का दुख है कि रूपधर की तुलना में हम कुछ हैं ही नहीं। हमारी इस पीढ़ी की दुस्थिति व बलहीनता को देखकर आनेवाली पीढ़ी क्या कहेगी, क्या सोचेगी।''

दुर्बुद्धि ने उसकी बातों को काटते हुए कहा ''अधिक भावुक मत बनो। आज पर्व दिन है। हमें धनुष से कोई लेना-देना नहीं है। उसे आज छूना भी नहीं चाहिये। उसे रख दो, किसी और दिन इसका उपयोग करेंगे।'' यह बात सबको सही लगी। जब सब भोजन कर चुके तब रूपधर ने कहा ''महाशयो, आज आपको इस धनुष से कुछ लेना-देना नहीं है। क्या यह धनुष मुझे दोगे? मैं भी जाँच लूँगा कि मैं कितना बलशाली हूँ। सच कहा जाए तो मेरा बल कभी का क्षीण हो गया।''

उसकी बातें सुनकर सभी तिलमिला उठे। उन्हें भय भी हुआ कि शायद यह बूढ़ा डोरी चढ़ा सके और निशाना मार सके। दुर्बुद्धि ने

करेंगे, तब रूपधर ने उनसे कहा ''मैं ही रूपधर हूँ। तुम दोनों मेरे लौटने पर खुश होनेवालों में से हो। भगवान की कृपा से अगर मैं इन शत्रुओं का विनाश कर पाऊँगा तो तुम दोनों को मुँहमाँगा इनाम दूँगा। खेतें दूँगा, घर दूँगा। अगर तुम्हें शक हो कि मैं रूपधर नहीं हूँ तो यह दाग़ देखो।'' उसने, उन्हें अपने पैर पर जो दाग था, दिखाया।

दोनों सेवक अपने यजमान को देखकर हर्ष-विभोर हो गये। ''अब आनंद और आँसू का समय नहीं है। मैं पहले अंदर जाऊँगा। बाद तुम दोनों एक -एक करके अंदर आओ। मैं धनुष माँगूँगा। वे नहीं देंगे। सुवरों का रखवाला मुझे वह धनुष लाकर देगा। बाद में घर में जो औरतें हैं, उनसे कहना होगा कि वे सब के सब अपने-अपने

नाराज़ी से कहा "नीच, क्या तुम्हारी मति भ्रष्ट हो गयी ? लगता है, शराब पीकर मस्ती में झूम रहे हो, वह खूब चढ़ चुकी है। अगर सचमुच ही तुमने उस धनुष को झुकाया तो क्या तुम्हें ज़िन्दा रहने देंगे ?"

"दुर्बुद्धि, यह वृद्ध मेरे पुत्र का अतिथि है। उसे धनुष देने से क्यों मना कर रहे हो ? क्या तुम्हें इस बात का डर है कि धनुष झुकाकर वह मुझसे शादी करेगा। तुम क्यों समझते हो कि वह ऐसा उद्देश्य रखता है।" पद्ममुखी ने क्रोध-भरे स्वर में कहा।

"हमें ऐसा कोई भय नहीं। परंतु जिस धनुष को हम झुका नहीं सके, जिसमें डोरी बाँध नहीं सके, यह बूढ़ा अगर ऐसा कर पायेगा तो हमारा यह घोर अपमान है। यह अपरिचित बूढ़ा अगर कुल्हाड़ियों के सिरों से होते हुए बाण चलाकर निशाना मारने में कामयाब हो जाए तो इससे बढ़कर हमारी बेइज़्ज़ती और क्या हो सकती है।" विपुल-योद्धा ने कहा।

"माता, तुम क्यों बेकार इन बातों में पड़ती हो। मैं अगर यह बाण किसी को दान में दूँगा भी तो मुझसे पूछनेवाला मर्द इस देश में पैदा नहीं हुआ। अब तुम जाओ और अपना काम करो।" धीरमति ने निर्भीकता से कहा।

इन बातों को सुनकर पद्ममुखी को आश्चर्य भी हुआ और आनंद भी। अपने पुत्र को क़ाबिल होते हुए देखकर खुश होती हुई कमरे के अंदर चली गयी।

इतने में धनुष को लेकर सुवरों का रखवाला रूपधर के पास जाने लगा। इसे

लेकर रूपधर के पास जाने लगा। यह देखते हुए सभी चिल्ला पड़े। इनकी चिल्लाहटों से घबराये हुए सुवरों के रखवाले ने धनुष ज़मीन पर रख दिया। किन्तु धीरमति ने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा "उनके बकवास से तुम्हारा क्या वास्ता ? तुम अपना काम निर्भीक होकर करो।"

सुवरों के रखवाले ने धनुष उठाया और उसे रूपधर को दिया। फिर वह स्त्रियों के पास जाकर बहुकीर्ति से बोला "छोटे मालिक की आज्ञा है। वे चाहते हैं कि सब स्त्रीयाँ कमरों में चली जाएँ और दरवाज़े बंद कर लें। कोई गड़बड़ी हो भी जाए, वे बाहर न झाँकें।" उसकी समझ में नहीं आया कि यह सब कुछ क्या हो रहा है। फिर भी उसने सुवरों के रखवाले के कहे मुताबिक आवश्यक

छोड़ा, जो कुल्हाड़ियों के सिरों से होते हुए लक्ष्य को आसानी से बेध सका।

फिर उसने अपने बेटे धीरमति से कहा "पुत्र धीरमति, तुम्हारी प्रतिष्ठा को मैंने कोई ठेस नहीं पहुँचायी। तुमने तो खुद देख भी लिया कि मैंने बड़ी आसानी से डोरी चढ़ायी और बाण चलाया। ये तथाकथित बड़े लोग जो भी कहना चाहें, कहें। अब स्पष्ट है कि मेरा बल क्षीण नहीं हुआ। इन महाशयों के लिए रात के भोजन का प्रबंध करो। बाद विनोद कार्यक्रम तो यथावत् संपन्न होंगे ही।" कहकर उसने इशारा किया।

धीरमति फ़ौरन एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में बर्छी लेकर अपने पिता के पास आकर खड़ा हो गया। रूपधर ने अपने फटे-पुराने कपड़े निकाल दिये और फेंक दिया। छलांग मारकर वह चौखट पर खड़ा हो गया और बाक़ी बाणों को अपने पैरों के पास फैला दिया। "अभी असली खेल शुरु होने जा रहा हैं। मैं एक और निशाना बाँधने जा रहा हूँ। इसके पहले किसी और ने ऐसा निशाना बाँधा नहीं होगा" कहते हुए उसने बाण दुर्बुद्धि पर चलाया।

दुर्बुद्धि अथवा किसी और ने भी सपने में भी सोचा नहीं होगा कि वह बाण उसी पर चलाया जा रहा है और वह उसका शिकार होने जा रहा है। उस समय दुर्बुद्धि एक बड़े आकार की सुराही को दोनों हाथों से उठाकर शराब पी रहा था। तब वह बाण सीधे उसके कंठ में चुभ गया। सुराही उसके हाथों से नीचे गिर गयी और धड़ाम् से दुर्बुद्धि ज़मीन पर आ गिरा। दूसरे ही क्षण हाहाकार मच

प्रबंध किया। सुखप्राप्ति ने सिंहद्वार बंद किया और चुपके से अंदर चला आया।

इतने में रूपधर ने धनुष को अपने हाथ में लिया और उसे इधर-उधर घुमाते हुए देखने लगा। सबकी आँखें उसी पर केंद्रित थीं। "लगता है, धनुष व बाणों का ज्ञान रखता है। अगर डोरी भी चढ़ा सका तो निशाना क्या मारेगा। करने दो, उसे जो करना है।" यों उन लोगों ने तरह-तरह की टिप्पणियाँ कीं।

रूपधर ने बड़ी ही सुगमता से डोरी चढ़ायी और धनुष को बायें हाथ में लेकर दायें हाथ से डोरी को झंकृत किया। उससे बड़ी ही अच्छी ध्वनि निकाली। यह देखकर सब स्तंभित रह गये। रूपधर ने एक अच्छा बाण तरकस से निकाला और निशाने को देखते हुए बाण ऐसा

गया। सब अपने-अपने आसनों से उठे और हथियारों के लिए दीवार की ओर देखने लगे। पर दीवारों पर कोई हथियार नहीं था। ''एक मनुष्य को मार डालोगे ? दुष्ट, अभी मज़ा चखाते हैं। तुम्हें मारकर ही दम लेंगे'' बौखलाते हुए वे चिल्लाने लगे। तब भी उन्होंने सच नहीं जाना। उनका तो समझना था कि अनजाने में संयोगवश घटी घटना है।

रूपधर ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए उनसे कहा, ''अरे कुत्तो, तुम लोग समझते थे कि मैं ट्रोय से नहीं लौटूंगा। इसी साहस के बल पर तुम लोगों ने मेरे घर को घेर लिया और मेरी सारी जायदाद ख़तम करते रहे। मेरी दासियों को अपना बना लिया। मेरे जीवन काल में ही मेरी पत्नी से विवाह करना चाहा। तुममें दैवभीति नहीं है। मुझसे भी नहीं डरते। अब यमपाश से बचना असंभव है।''

भय के कारण किसी के भी मुंह से बात नहीं निकली। केवल विपुल योद्धा कहने लगा ''अगर सचमुच तुम रूपधर हो तो तुम्हारी बातों में सच्चाई है। हमसे बड़ी गलतियाँ हुई। हमने बड़े-बड़े अन्याय किये। इन सबका मूल कारक है, दुर्बुद्धि। वह केवल तुम्हारी पत्नी के लिये यहाँ नहीं आया। वह तुम्हारे बेटे धीरमति को मारना चाहता था और सारी जायदाद हड़पना चाहता था। हम तुम्हें हरज़ाना देंगे। जो शराब पी, उसका दाम चुकायेंगे। चंदे लेकर धन जुटायेंगे। हममें से हर कोई बीस बैल देंगे।''

''दुष्टों, तुम लोगों ने जो मनमाना किया, उसका एक ही दंड है। वह है - तुम लोगों के प्राण। तुममें से हर एक की जान लूँगा।'' रूपधर ने कहा।

विपुलयोद्धा ने अपने अनुचरों से कहा. ''भाइयो, यह हमें मार डालने पर तुला है।

तलवार निकालो और एकसाथ इसपर हमला कर दो। देखते हैं, कितनों को मार सकेगा।''

उसने चिल्लाते हुए वार किया रूपधर पर। दूसरे ही क्षण रूपधर का बाण उसकी छाती में चुभ गया।

बाक़ी सब लोग रूपधर पर पिल पड़े। धीरमति ने अपनी बर्छी से कुछ लोगों को मार डाला। फिर उसने अपने पिता से कहा ''पिताजी, आपको, सुवरों के रखवाले और पशुपालक के लिए अभी हथियार ले आता हूँ।'' ''बाण ख़त्म हो जाएँ, इसके पहले ही ले आना।'' रूपधर ने कहा। धीरमति कमरे में गया, जहाँ ढाल, बर्छियाँ, शिरस्त्राण थे। उन्हें लेकर वह तुरंत लौटा। चारों ने हथियार अपने हाथ में लिये और दरवाज़े के सामने खड़े हो गये, जिससे कोई भाग न सके। बाणों के ख़तम हो जाने के बाद रूपधर ने धनुष को नीचे रख दिया और बर्छियाँ अपने हाथों में लीं। तब तक कुछ लोग मर चुके थे और कुछ जीवित थे। तब काली ने अपने यजमानों की सहायता की। वह पीछे से गया और कमरे में घुसकर बर्छियाँ व ढाल ले आया।

रूपधर ने जब यह जाना तो उसने कहा ''धीरमति, लगता है कि घर की दासियाँ इनकी मदद कर रही हैं।''

'ग़लती मुझसे हुई पिताजी। ताला लगाना भूल गया।'' कहकर वह और सुवरों का रखवाला ताला लगाने दौड़े-दौड़े गये। दूसरी बार जब काली कमरे के अंदर घुसा तो सुवर के रखवाले ने उसे पकड़ लिया।

बाद में दोनों पक्षों में बर्छियों से लड़ाई हुई। भाग्यवश शत्रुओं की एक भी बर्छी से रूपधर या धीरमति घायल नहीं हुए। पर उनकी फेंकी बर्छियों से बहुत-से शत्रु मर गये। जब बर्छियाँ ख़तम हो गयीं तो वे द्वंद युद्ध करने लगे। उस दिन देवताओं की कृपा-दृष्टि रूपधर पर थी। सब के सब शत्रु मर गये। दो शत्रुओं को उसने जान बख़्शी, क्योंकि वे नादान थे।

विशाल कमरा शवों से भरा पड़ा था। रूपधर ने बूढ़ी दासी को बुलाकर कहा ''दासियों को बुलाओ और यह कमरा धोकर साफ़ करावो।'' नौकरों से कहा कि इन शवों को बाहर ले जाओ।''

(अगले अंक में समाप्ति)

विष्णु की माया

इंद्र ने विरुथ नामक एक गंधर्व को ध्रुव की तपस्या का भंग करने के लिए राक्षस के रूप में भेजा। विरुथ ध्रुव के पास आया किन्तु डर के मारे थरथर काँपने लगा। एक मुनि ने जब यह देखा तो विरुथ को शाप दिया कि तुम सचमुच ही राक्षस बन जाओ।

इस शाप के कारण विरुथ ने अपना देवत्व खो दिया। शबरी नदी के तट को अपना निवास-स्थल बना लिया और मुनियों को खाता हुआ राक्षस-जीवन बिताने लगा। वह हर प्रकार से राक्षस ही था किन्तु उसमें दिव्य दृष्टि अब भी मौजूद थी। उसे मालूम पड़ता था कि तीनों लोकों में कहाँ, क्या हो रहा है।

शबरी व गोदावरी के संगम पर एक आश्रम था, जहाँ कुछ मुनि रहते थे। एक दिन मुनि बालक जंगल में समिधाएँ चुनने आये। विरुथ भी वहाँ आया। उसे देखते ही मुनिबालक डरकर भाग गये। पर, भरत नामक एक बालक निर्भीक वहीं खड़ा रहा। उस बालक का धैर्य-साहस देखकर विरुथ चकित रह गया।

भागे बालकों ने भरत के पिता से कहा "आपका पुत्र राक्षस के हाथ आ गया।" भरत का बाप दौड़ा हुआ आया और उसके पुत्र क़ो अपने वश में लिये हुए राक्षस से कहा "यह मेरा इकलौता पुत्र है। चाहो तो मुझे खा लो और इसे छोड़ दो।" उसने बहुत गिड़गिड़ाया।

"ठीक है। मैं तुम्हें एक मौक़ा देता हूँ। कल सबेरे मैं फिर से आऊँगा। इतनें में अपने पुत्र को ऐसी जगह पर छिपा दो, जिसे मैं नहीं जानता। अगर ऐसा कर सकोगे तो भविष्य में कभी भी इस बालक से मेरा कोई संबंध नहीं होगा" विरुथ ने कहा।

भरत का बाप उसे अपने आश्रम में ले

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

गया। उसने संकल्प किया कि पुत्र की रक्षा के लिए अपना पूर्ण तवोबल समर्पित करूँगा।

उसने होम किया और भगवान ब्रह्मा की पूजा की। ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुए।

''मेरे पुत्र की रक्षा कीजिये। कल प्रातःकाल तक उसे किसी ऐसी जगह पर छिपाइये, जहाँ राक्षस पहुँच न सके'' भरत के पिता ने ब्रह्मा से विनती की।

ब्रह्मा, भरत को अपने लोक में ले गये। जिस पद्म पुष्प में वे आसीन होते थे, उसे उसकी एक पंखुड़ी बना दी।

दूसरे दिन विरुथ ने निर्धारित स्थल पर आकर भरत के पिता से कहा ''मूर्ख, ब्रह्मा ने तुम्हारे पुत्र को पद्मपुष्प की एक पंखुड़ी के रूप में परिवर्तित किया और तुम समझते हो कि मैं इतना भी जान नहीं पाऊँगा। इस बार तो तुम हार गये। तुम्हें एक और मौक़ा देता हूँ। इस बार कहीं किसी और जगह पर छिपा दो, जहाँ मैं पहुँच नहीं पाऊँगा।''

भरत के पिता ने शंकर का स्मरण किया। भगवान शंकर प्रत्यक्ष हुए। उसने ब्रह्मा से जैसी विनती की, शंकर से भी की। शंकर उसे कैलास ले गये और भरत को कली के रूप में परिवर्तित करके पार्वती के कान में सजाया।

विरुथ दूसरे दिन आया और भरत के पिता से कहा ''तुम्हारा बेटा कली के रूप में पार्वती के कान में सुशोभित है। यह रहस्य मैं जान गया हूँ। उसे छिपाने का एक और मौक़ा तुम्हें दे रहा हूँ। यही आख़िरी मौक़ा है।

उस दिन भरत के पिता ने भगवान विष्णु की आराधना की। विष्णु प्रत्यक्ष हुए तो उसने अपने पुत्र की रक्षा का भार उन्हें सौंपा। विष्णु बालक को लेकर चले गये।

दूसरे दिन विरुथ आया। उसने अपनी दिव्य दृष्टि से तीनों लोकों को खूब छाना। परंतु मालूम नहीं हो पाया कि भरत कहाँ है। उसने आवेश में आकर चिल्लाया ''ऐ मुनिबालक, तुम कहाँ हो?''

''यहाँ हूँ'' भरत का स्वर उसे स्पष्ट सुनायी पड़ा।

विरुथ ने कहा ''मैं तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ूँगा। सामने आ जा।'' विरुथ की छाती को चीरता हुआ भरत बाहर आया। राक्षस मरकर नीचे गिरा। विरुथ अब शाप-मुक्त हो गया। फिर से गंधर्व बन गया। भरत के पिता को प्रणाम करता हुआ स्वर्ग लौटा।

द्विगुण का उपवास

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ता गया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा ''राजन, घने अंधकार में, इस भयानक श्मशान में, जहाँ भूत-प्रेतों का संचार हो रहा है, नाना प्रकार की यातनाएँ सहते जा रहे हो। जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तुम जूझ रहे हो, पता नहीं, तुम्हारे प्रयत्नों का फल तुम्हें प्राप्त होगा या नहीं। कभी-कभी हमारी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं, जिसकी कल्पना भी हम नहीं कर पाते। हम सोच भी नहीं सकते कि हमारी इच्छाएँ इतने सुगम रूप से संपूर्ण होंगीं। ऐसा क्यों होता है, विज्ञ व तपस्वी भी तार्किक रूप से सिद्ध नहीं कर पाते। उदाहरणार्थ द्विगुण नामक एक व्यक्ति के उपवास के बारे में तुम्हें बताऊँगा। थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनो'' यों

बैताल कथा

कहकर बेताल ने आगे यों कहा।

सब कहा करते थे कि बलभद्रपुर के बलराम के घर क़े पिछवाड़े में भूमि तले निधि है। बलराम ने इसे पाने के लिए बहुत-से प्रयत्न किये, पर वह सफल नहीं हो पाया।

एक दिन एक सन्यासी उसके घर आया और उससे कहा "सन्यासी या किसी उत्तम पुरुष को अपने घर में तीन दिनों तक खाना खिलाओ। चौथे दिन उससे कड़ा उपवास रखवाओ। पाँचवें दिन उसके हाथ में कुदाल थमावो। वह जहाँ खोदेगा, वहाँ तुम्हें निधि प्राप्त होगी।"

उस दिन से बलराम ने उस-उस मनुष्य को अपने घर आह्वानित किया, जिसे लोग अच्छा मनुष्य कहते थे। उसने कहा भी कि उसे अगर निधि मिल जाए तो उसका आधा भाग उसी का होगा। किन्तु किसी ने भी उसका निमंत्रण स्वीकार नहीं किया। उन सबने यही कहा कि पराये की संपत्ति की आशा रखना पाप है। प्रलोभन में आकर एक-दो आये। उन्होंने तीनों दिन स्वादिष्ट भोजन खाया और चौथे दिन कठोर उपवास भी रखा। पाँचवें दिन कुदाल लेकर जब उन्होंने ज़मीन खोदी तो कुछ नहीं मिला। अपने उत्तम न होने का प्रमाण मिल गया तो लज्जा के मारे गड़ गये। कुछ लोग तो खुल्लमखुल्ला कहने लगे कि सन्यासी झूठा है, उसकी बातों में सच्चाई नहीं है। जो भी हो, शनैः शनैः बलराम के घर आनेवालों की संख्या घटती गयी।

कुछ दिनों के बाद वही सन्यासी बलराम के घर आया। बलराम ने उससे पूरी बात बतायी। तब सन्यासी ने गंभीर होकर कहा "मैं तुमसे कह चुका हूँ कि अतिथि कठोर उपवास रखे। कठोर उपवास का अर्थ है कि वह चौथे दिन पानी तक न छुए। क्या वे इस नियम का पालन कर रहे हैं ?"

बलराम ने याद की। कुछ लोगों ने फल खाये। कुछ ने दूध पिया। पर सबने पानी पिया। अब बलराम की समझ में आ गया कि निधि प्राप्त करने के लिए कठोर उपवास रखा कैसे जाए। उसने सन्यासी से कहा "स्वामी, निधि के लिए दूसरा कोई कठोर उपवास नहीं रखेगा। अगर वह काम मैं स्वयं करूँ तो कैसा होगा?"

"तुम्हारे लिए फल की अपेक्षा किये बिना जो कठोर उपवास-व्रत का पालन करेगा, वही सत्पुरुष है। अपने प्रयोजन के लिए तुम

स्वयं उपवास रखोगे तो वह स्वार्थ कहलायेगा और ऐसा करना समुचित नहीं है। यहाँ से ठोड़ी दूरी पर एक छोटी-सी बस्ती है। उस बस्ती में द्विगुण नामक एक व्यक्ति है। उसे बुलाकर लाना। उससे कठोर उपवास करवाओगे तो यह कार्य सफल होगा।'' यों कहकर सन्यासी चला गया।

बलराम तुरंत निकल पड़ा। पैदल चलते-चलते शाम तक उस बस्ती में पहुँचा। द्विगुण का पता जानने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। बस्ती का हर कोई उसे जानता है। उस घर को देखकर बलराम चकित रह गया।

उसने सोच रखा था कि द्विगुण दरिद्र होगा। पर घर इंद्र भवन की तरह भव्य है। घर के अंदर जाकर देखा तो घर दास-दासियाँ से भरा पड़ा है। द्विगुण उनके बीच बहुत ही तेजस्वी दिख रहा है। वह लंबा व दृढ़काय है। रेशमी वस्त्र पहने हुए है और शरीर पर गहने ही गहने हैं। वैष्णव आलय के भगवान की मूर्ति की तरह प्रकाशमान व ज्योतिर्मय है।

बलराम को देखते ही द्विगुण स्वयं चला आया और उसका स्वागत किया। पूछा कि किस काम पर पधारे हैं। ऐसे महानुभाव को अपना कार्य बताने में वह सकुचाया। फिर भी द्विगुण ने बारंबार पूछकर जान ही लिया कि वह किस काम पर उससे मिलने आया।

बलराम अंदर ही अंदर डर रहा था कि इस पर द्विगुण की क्या प्रतिक्रिया होगी। किन्तु उसने बड़े प्यार से उसकी भुजा को थपथपाते हुए कहा ''आज रात को यहीं विश्राम कीजिये। सबेरे साथ-साथ जाएँगे। इस बीच सब प्रबंध कर लूँगा।''

बलराम बहुत ही प्रसन्न हुआ।

द्विगुण के आतिथ्य के कारण बलराम घोड़े बेचकर सो गया। तड़के ही द्विगुण के सेवक ने उसे जगाया और कहा ''जल्दी तैयार हो जाइये। यजमान तैयार बैठे हैं।''

बलराम पलंग पर बैठ गया। सेवकों ने बड़े ही वैभव के साथ स्नान करवाया। उसने सेवकों से पूछकर द्विगुण के बारे में जानकारी प्राप्त की तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उनके कहे अनुसार, द्विगुण अपने सेवकों को बहुत ही अच्छा वेतन देता है। पर, उन्हें बहुत सताता है। बहुत ही अच्छे काम करता रहता है, पर कितने ही व्यसनों का शिकार है।

बलराम ने बड़ी ही आतुरता से पूछा ''आखिर द्विगुण अच्छा आदमी है या बुरा ?''

"उनमें अच्छाई भी है और बुराई भी। परंतु हाँ, अपनी बुराई वे नहीं छिपाते। यही उनकी विशिष्टता है" सेवकों ने कहा।

यह सुनकर बलराम चिंतित हुआ। "पता नहीं, सन्यासी ने द्विगुण का नाम क्यों सुझाया। उनके उपवास से मालूम नहीं, लाभ होगा या नहीं।" उसके मुँह से अनजाने में यह बात निकल गयी।

इसपर सेवक हँस पड़े और कहा "अपने उपवास के बारे में रात भर हमारे यजमान प्रचार करते रहे। हम भी यह सुनकर भौंचक्के रह गये। उपवास की दीक्षा के लिए क्या हमारा यजमान ही आपको मिला ? सब दिन में तीन बार खाते हैं तो ये छे बार खाते हैं। उनसे उपवास रखवाना भगवान से भी संभव नहीं।"

उनकी बातों से बलराम की परेशानी और बढ़ गयी। उसने पूरा भार सन्यासी पर डाल दिया और इस विषय में सोचना ही छोड़ दिया।

थोड़े ही समय में यात्रा के लिए गाड़ी आयी। उस गाड़ी में बहुत-सी गठरियाँ थीं। बलराम व द्विगुण के साथ-साथ एक रसोइया भी था। द्विगुण ने बलराम को रसोइये का परिचय कराया और कहा "मैं भोजन-प्रिय हूँ। इसकी रसोई को छोड़कर किसी और की रसोई मुझे नहीं भाती। जहाँ भी मैं जाऊँ, इसे अपने साथ अवश्य ले जाता हूँ।"

गाड़ी निकल पड़ी। रास्ते में रसोइये ने बलराम व द्विगुण को फलाहार दिये। द्विगुण ने बलराम से दुगुना खाया। उसकी जीर्ण-शक्ति पर बलराम ने दांतों तले उंगलियाँ दबायीं। थोड़ी ही देर बाद द्विगुण ने फिर से पकवान खाये।

थोड़ी दूर जाने के बाद उन्होने रास्ते में गुज़रते हुए एक आदमी को देखा। द्विगुण ने गाड़ी रुकवायी और उससे बातें कीं। उस आदमी ने कहा "मेरी पत्नी बीमार है। वैद्य ने जड़ी-बूटियाँ माँगी तो उन्हें लाने जा रहा हूँ।" द्विगुण ने अपनी सहानुभूति जतायी और उसे धैर्य से काम लेने को कहा।

"मुझे भी अपनी गाड़ी में बिठा लीजिये। जल्दी ही पास का गाँव पहुँच जाऊँगा। ऐसे तो मेरी पत्नी की जान का ख़तरा नहीं है, पर दर्द की वजह से बहुत घबरा रही है। मैं चाहता हूँ कि जल्दी जड़ी-बूटियाँ लाकर उसका दर्द दूर करूँ" उस आदमी ने गिड़-गिड़ाते हुए कहा।

"जान का ख़तरा नहीं है न ? शरीर की पीड़ा उसे बरदाश्त करनी ही पड़ेगी । पाँच साल पहले तुम्हारी पत्नी ने अनावश्यक ही मेरे पुत्र पर संदेह किया कि उसने मक्खन की चोरी की । तुम्हारी पत्नी ने उसे खूब पीटा । इसी का नतीजा है, तुम्हारी पत्नी दर्द से पीड़ित है । सज़ा तो उसे भुगतनी ही पड़ेगी" कहकर उस आदमी को गाड़ी में बिठाये बिना द्विगुण आगे निकल गया ।

उसके बरताव पर बलराम को आश्चर्य हुआ ।

थोड़ी दूर और जाने के बाद उन्होंने देखा कि एक आदमी पेड़ के नीचे बैठकर रोये जा रहा है । द्विगुण ने गाड़ी रुकवा दी और उसके पास जाकर उसे ग़ौर से देखने के बाद पूछा "तुम नरसिंह ही हो ना ? यहाँ बैठकर क्यों रो रहे हो ?"

नरसिंह ने कहा "मेरे पिता चार दिनों के पहले गुज़र गये । कहीं काम पर जाना चाहूँ तो उन्हीं की याद सता रही है । मुझसे दुख सहा नहीं जा रहा है ।"

"अरे, तुम्हारे पिता मर गये । बहुत बार उन्होंने मुझे बचपन में अमरूद खाने को दिया । ताड़ के कच्चे फलों का गूदा दिया" कहते हुए द्विगुण ज़ोर से रो पड़ा ।

नरसिंह, द्विगुण की रुलाई देखकर स्तंभित रह गया । उसने रोना बंद कर दिया और द्विगुण को ढाढ़स बंधाने लगा । किन्तु द्विगुण तुरंत ही हँस पड़ा और बोला "तुम्हारा बाप दुष्ट है । जब तक जीवित था, दूसरों को धोखा देता रहा । खेत में काम करनेवालों को उनकी मेहनत का फल भी देता नहीं था ।

एक एकड़ की मेरी ज़मीन अपने खेत में मिला ली । ऐसे दुष्ट की मौत पर हँसना चाहिये, रोते क्यों हो ?" कहकर वह गाड़ी में बैठ गया ।

द्विगुण की बातों में शायद सच्चाई हो, किन्तु उसे इतनी कठोरता के साथ व्यवहार करना नहीं चाहिये था । बलराम को उसकी यह नीयत अच्छी नहीं लगी । दुपहर को गाड़ी रुकवा दी और द्विगुण ने भरपेट खाया । द्विगुण बुरा न माने, इसके लिए बलराम ने भी थोड़ा-सा खा लिया ।

"यहाँ थोड़े समय तक विश्राम करेंगे । एक घंटे के बाद मुझे फिर भूख लगेगी । तब फिर खाऊँगा और निकलेंगे" द्विगुण ने कहा ।

बलराम ने सोचा, अरे यह भी कोई भूख हुई । दुपहर को खाने के बाद गाड़ी निकली ?

शाम तक वे बलराम के घर पहुँचे ।

तब से घर में द्विगुण का व्यवहार बड़ा विचित्र था । पहले उसने बलराम की पत्नी की सुँदरता की प्रशंसा की । बाद उसने उससे कहा कि तुम सुँदर हो, किन्तु घर को सुँदर नहीं रखा । बेचारी उसकी बातों पर दुखी हुई । उसने फिर बलराम के बच्चों की सुँदरता पर अपना हर्ष व्यक्त किया, पर पल भर में उनके अल्हड़पन पर नाराज़ हुआ । बलराम को निधि प्राप्त हो जायेगी, इसपर अपना आनंद व्यक्त किया । किन्तु तुरंत ही इस बात पर चिढ़ता रहा कि उसके इस काम के लिए उसे अपना घर, वैभव छोड़कर आना पड़ा ।

तीन दिनों तक द्विगुण ने, बलराम के घर स्वादिष्ट भोजन किया । दिन में छे बार खानेवाले आदमी को आज तक देखा नहीं, इसलिए घर के सब लोगों के आश्चर्य की सीमा नहीं थी । बलराम के परिवार के सब सदस्यों को संदेह था कि ऐसा आदमी उपवास कैसे रखेगा ।

तीसरे दिन रात को, सोने के पहले द्विगुण ने, बलराम की पत्नी को बुलाकर कहा ''देवी, मैं कल कठोर उपवास रखूँगा । पानी भी नहीं छुऊँगा । कल तुम आराम करो ।''

थोड़ी देर बाद बलराम को बुलाकर कहा ''तुम्हें निधि मिल जाए तो मुझे उसमें से हिस्सा दोगे ?''

बलराम ने सोचा कि ऐसे स्वार्थी से भला मुझे क्योंकर निधि मिलेगी । उसने कहा ''निधि अगर मिल जाए तो उसका चौथा हिस्सा आपका होगा ।''

चौथा दिन आ ही गया । बलराम ने सोचा, द्विगुण कठोर उपवास रखेगा । किन्तु उसने अपने रसोइये से पकवाने बनवाये और तीनों बार भरपेट खाया । उससे पूछा गया तो उसने कहा ''ऐसे तो दिन में छे बार खाता हूँ । तीन बार मैंने खाया ही नहीं, इसलिये यही मेरे लिए कठोर उपवास है । ''

बलराम चिंतित हुआ । पर, पाँचवें दिन सबेरे द्विगुण ने हाथ में कुदाल लेकर जब खोदा, तब खन-खन की आवाज़ आयी । वहीं थोड़ा और गहरा खोदने के बाद सोने की अशर्फ़ियों से भरा एक बड़ा घड़ा मिला ।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा से कहा ''राजन्, सन्यासी ने बलराम से कहा कि निधि प्राप्त करना चाहते हो तो एक उत्तम पुरुष को तीन दिनों तक भोजन खिलाओ

और चौथे दिन उससे कठोर उपवास रखवाओ। है न ? पर द्विगुण ने सन्यासी के कहे अनुसार चौथे दिन उपवास नहीं रखा, फिर भी उसी के कारण बलराम को निधि मिली। देखा जाए तो द्विगुण में उत्तम पुरुष के गुणों का भी लोप है। अपनी पत्नी की अस्वस्थता पर दुखी उस आदमी को अपनी हमदर्दी नहीं जतायी, उल्टे उसे गालियाँ दीं। कहा भी कि उसकी पत्नी को पीड़ा सहनी पड़ेगी। पिता की मृत्यु पर दुखी नरसिंह को सांत्वना नहीं दी, उल्टे उसे खरी-खोटी सुनायी। पानेवाली निधि में हिस्सा माँगा। यह सब देखते हुए लगता है कि संयोगवश बलराम को निधि प्राप्त हुई, जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। इसमें तो द्विगुण के उत्तम पुरुष के लक्षणों का कोई प्रभाव नहीं दीखता। मेरी दृष्टि में यह मानना कि द्विगुण के कारण ही निधि प्राप्त हुई, भूल है, भ्रम है। मेरे इन संदेहों को जानते हुए भी दूर नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने कहा ''लोक में कहीं भी कोई भी संपूर्ण उत्तम पुरुष नहीं होता। उत्तम व्यक्ति अपनी बुराई को छिपा लेता है तो उसकी उत्तम स्थिति को ग्रहण लग जाता है। द्विगुण ने अपनी अच्छाई और बुराई को पृथक किया है। इसी कारण उसकी अच्छाई या बुराई किसी से छिपी नहीं है। वह सभी के सम्मुख स्पष्ट है। उसमें दो व्यक्तित्व हैं, वह हर रोज़ छे बार खाता है, अपनी अच्छाई के कारण ज़रूरत पड़ने पर दूसरो की सहायता करता है। बुराई से वह दूसरों से द्वेष करता है, उनके स्वार्थ पर उँगली उठाता है। स्वयं वैभवशाली है, पर बलराम की सहायता करने चला आया। उसमें जो अच्छा आदमी है, उसने बलराम की पत्नी का खिलाया खाना खाया। बुरे आदमी ने गर्व में आकर रसोइये से खाना बनवाया और खाया। उसमें जो उत्तम है, उसने छे बार के बदले तीन ही बार खाकर कठोर उपवास की दीक्षा ली और इसी वजह से बलराम को निधि प्राप्त हो पायी। इन कारणों से निधि का मिलना संयोग कहलाया नहीं जा सकता।''

राजा का मौन-भंग करने में सफल बेताल शव सहित ग़ायब होकर पेड़ पर जा बैठा।

आधार - चंद्रकला की रचना

साष्टांग नमस्कार

बलिया समुद्री तट पर स्थित एक गाँव है। एक बार वहाँ बहुत बड़ा तूफ़ान आया, जिसके कारण गाँव के बहुत से घर बरबाद हो गये। श्याम नामक एक ग़रीब किसान ने अपने उजड़े घर की मरम्मत करानी चाही। अड़ोस-पड़ोस के लोगों से मदद माँगी। उन्होंने उससे बताया कि ब्याज पर कर्ज़ देनेवाले चमन के पास जाओ और मदद माँगो।

श्याम, चमन के पास गया और उससे हजार रुपयों का कर्ज़ माँगा। चमन ने उसे नख से शिख तक ग़ौर से देखा और कहा "तुम श्याम हो न ? अच्छा, मुझे जानते भी हो।" उसके स्वर में मजाकियापन था।

"गाँव में क्या कोई ऐसा है, जो आपको नहीं जानता" श्याम ने कहा। "मुझे लगा कि तुम मुझे नहीं जानते। क्या किसी भी दिन जब-जब मैं तुमसे सड़क पर मिलता था या तालाब के किनारे आमना-सामना होता था तो तुमने क्या मुझे नमस्कार किया? कभी नहीं। तुम तो अव्वल दर्जे के घमंडी हो।" चमन ने नाराज़ी से कहा।

"अनजाने में मुझसे भूल हो गयी" कहते हुए श्याम ने चमन को नमस्कार किया।

"मुझे नमस्कार करने के लिए तुम्हें एक तूफ़ान की ज़रूरत आ पड़ी। ऐसे नमस्कार तो गाँव के सब लोग करते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा घमंड चकनाचूर हो जाए। अब तुम साष्टांग नमस्कार करो।" चमन ने आज्ञा दी।

श्याम ने चमन की इच्छा पूरी की। फिर उसने उससे एक हज़ार रुपये लिये और निकल पड़ा। एक पेड़ के नीचे खड़े होकर ये सब देख रहा था वरद। उसने जाते हुए श्याम को रोका और कहा "छी.छी. कर्ज़ पाने साष्टांग नमस्कार किया।"

श्याम ने कहा "चमन यह कर्ज़ मुझसे वसूल करे, उसके पहले एक-दो बार नहीं, बहुत बार उससे साष्टांग नमस्कार करवाऊँगा। तुम देखते रहना।"

रसिकलाल

स्वर्गोपम प्रवाल-द्वीप

शब्द : मीरा नायर ◆ चित्र : गौतम सेन

कोचि (केरल) से दो सौ से चार सौ कि.मी. पश्चिम में अरब सागर में स्थित हैं लक्षद्वीप. इनको छोड़ कर कोई और प्रवाल-द्वीप यानी मूंगे की चट्टानों से बने द्वीप भारत में नहीं हैं.

लक्षद्वीप एक छोटा-सा द्वीपपुंज है, जिसमें ३६ द्वीप हैं. यह भारत का सबसे छोटा केंद्रशासित प्रदेश है. यह दर्जा इसे १९५६ में मिला और १९७४ में इसे 'लक्षद्वीप' नाम दिया गया. उससे पहले इसे 'लाकदीव, अम्मेनिदीव तथा मिनिक्कोय द्वीप' कहा जाता था.

इन ३६ द्वीपों में सिर्फ दस पर मानव-बस्ती है. ये हैं – अम्मेनि, अंद्रोत्त, अँगात्ति, बित्रा, चेत्तलात, कड्मत, कल्पेनि, कवरत्ति, किल्तान और मिनिक्कोय.

पहले पहल यहां केरल के निवासी पहुंचे. किस्सा है कि केरल के अंतिम शासक चेरमान पेरुमाळ् जब इस्लाम धर्म ग्रहण करके मक्का रवाना हो गये, तो कण्णानूर के राजा ने उन्हें मना कर लौटा लाने के लिए अपने आदमी भेजे. मगर उनका जहाज एक समुद्री चट्टान से टकरा गया और उन्हें वापस लौटना पड़ा.

वापसी यात्रा में उन लोगों ने कई रमणीय द्वीप देखे और अपने राजा को उनका हाल सुनाया. राजा ने घोषणा की कि मेरे प्रजाजनों में से जो भी उन द्वीपों पर जा कर वहां खेती करें, वह जमीन उनकी होगी. मगर अब नयी खोजों से पता चला है कि इससे बहुत पहले से भारतवासी इन द्वीपों पर रहते आये थे. वहां प्राचीन बौद्ध मूर्तियां मिली हैं.

सबसे पहले बस्तियां बसीं अम्मेनि में. यह द्वीप तीन कि.मी. लंबा और १.६ कि.मी. से तनिक ज्यादा चौड़ा है. अम्मेनि के कारीगर कछुए और नारियल के खपड़ों से सुंदर छड़ियां बनाते हैं. यहां के संगतराश मूंगे और पत्थर पर सुंदर नक्काशी करने के लिए मशहूर हैं.

अगात्ति लक्षद्वीप का सबसे गरम हिस्सा है. यह इस द्वीप-समूह का सबसे पश्चिमी द्वीप है. अप्रैल १९८८ में मुख्यभूमि और लक्षद्वीप के बीच वायुदूत विमानसेवा शुरू हुई. हवाई अड्डा अगात्ति पर ही है.

अंद्रोत्त अगात्ति के दक्षिण-पूर्व में है. सबसे पहले इसी द्वीप के निवासियों ने इस्लाम की दीक्षा ली. आज लक्षद्वीप की ५१,६८० की आबादी में से ९४% आबादी इस्लाम की अनुयायी है.
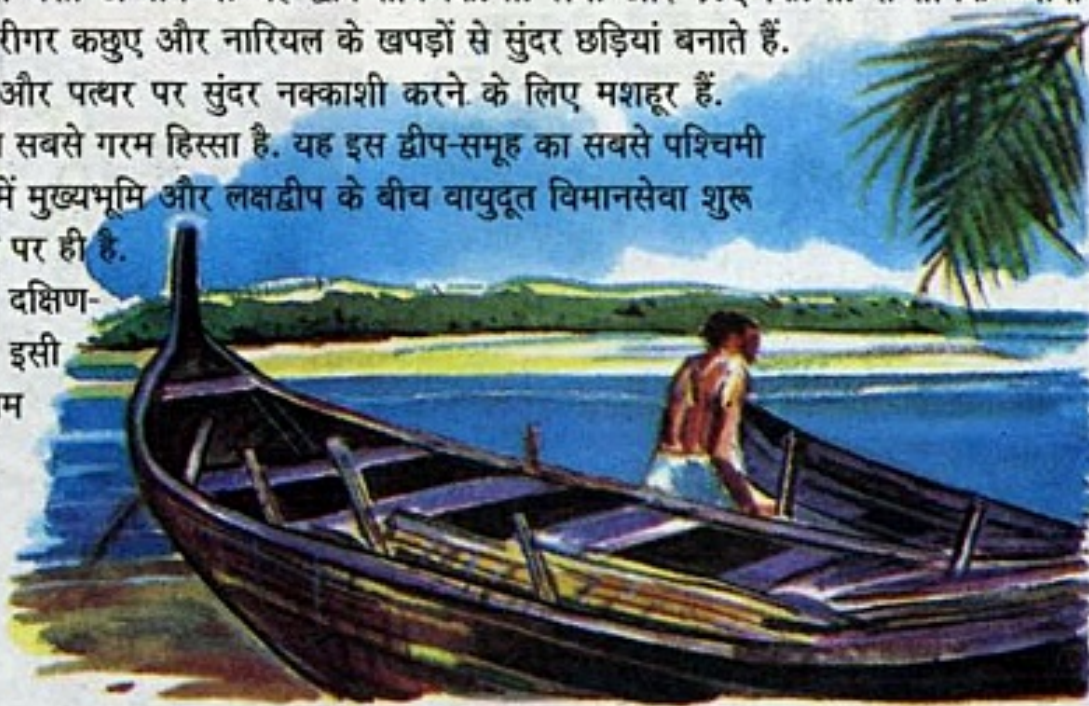
अंद्रोत्त का एक मल्लाह

इस्लाम लक्षद्वीप में पहुंचा कैसे ? ऐसी मान्यता है कि एक मुस्लिम संत हजरत ओबैदुल्ला को स्वप्न में पैगंबर मुहम्मद ने दर्शन दिये और आज्ञा दी कि दूर देशों में जा कर इस्लाम का प्रचार करो.

हजरत ओबैदुल्ला जहाज पर सवार हो कर चल पड़े. मगर रास्ते में तूफान आया और जहाज डूब गया. पर ओबैदुल्ला लकड़ी के एक तख्ते के सहारे तैरते हुए अम्मेनि आ पहुंचे.

ओबैदुल्ला को अम्मेनि के लोगों को इस्लाम में दीक्षित करने में शुरू में सफलता नहीं मिली. वे पास के द्वीपों में चले गये और अंद्रोत्त, कवरत्ति और कल्पेनि के निवासियों को इस्लाम की दीक्षा दी. उनकी मृत्यु अंद्रोत्त में हुई. उनकी कब्र वहां की जुम्मा मस्जिद में है.

अंद्रोत्त लक्षद्वीप का सबसे बड़ा द्वीप है. वह नारियल के बागों से पूरी तरह आच्छादित है. और यहां के नारियलों का मुकाबला नहीं.

लक्षद्वीप की राजधानी कवरत्ति अम्मेनि और आंद्रोत्त के बीच में स्थित है. यह छह कि.मी. लंबा और करीबन एक कि.मी. चौड़ा है. यह लक्षद्वीप का सबसे विकसित द्वीप है और मुख्यभूमि के लोगों की सबसे ज्यादा आबादी इसी पर है. सारे सरकारी दफ्तर और सरकारी कर्मचारियों के घर भी यहीं पर हैं.

कवरत्ति के कारीगर बड़े ही कुशल हैं. इसका प्रमाण है यहां की उजरा मस्जिद, जो कि इस केंद्रशासित प्रदेश की ५२ मस्जिदों में सबसे दर्शनीय है. इसकी छत का भीतरी हिस्सा समुद्र में बह कर आयी

समुद्र में बह कर आयी लकड़ी पर नफीस नक्काशी, उजरा मस्जिद

लकड़ी का बना हुआ है. उस पर नफीस नक्कशी की गयी है और उसे आकर्षक हरे व लाल रंगों से रंगा गया है. इस मस्जिद के कुएं के पानी में रोग दूर करने की शक्ति बतायी जाती है.

कवरत्ति के दक्षिण में है कल्पेनि द्वीप, जिसे अरब लेखक 'कोल्फेनी' कहते थे. यह अरबस्तान से भारत आनेवाले जहाजों के मार्ग पर पड़ता है. यह एक विशाल छल्लेनुमा समुद्रताल से घिरा है, जिसके बाद समुद्र है. कल्पेनि के आस-पास तीन टापू हैं – चेरियम्, तिलकम् और पित्ति.

पित्ति को 'पक्षिपित्ति' भी कहते हैं. तीनों टापुओं में यह सबसे दिलचस्प है. असल में यह एक छोटी-सी चट्टान है. साहसी लोग ही इस तक पहुंच पाते हैं, क्योंकि अंतिम ५० मीटर की दूरी तैर कर पार करनी पड़ती है. घास की एक पत्ती तक नहीं उगती पक्षिपित्ति पर. मगर हजारों पक्षी यहां निवास करते हैं – मुख्य रूप से टिटिहरी जाति के. उनकी चहचहाट दूर-दूर तक सुनाई देती है.

दो किस्म की टिटिहरियां – 'सूटी' और 'नॉडी' यहां अंडे देती हैं. ये अपने घोंसले रेत, बजरी या चट्टान पर बनाती हैं. टूटी रंग-बिरंगी सीपियों से बने ये घोंसले बड़े ही आकर्षक होते हैं. इन टिटिहरियों के अंडे आकार में मुर्गी के अंडों जैसे मगर काली-भूरी चकत्तियोंवाले होते हैं. अम्मेनि और अंद्रोत्त के निवासी इन्हें बड़े शौक से खाते हैं. अंडे बटोरने वे पक्षिपित्ति आया करते थे. मगर सरकार ने अब पक्षिपित्ति को पक्षियों का अभयारण्य घोषित कर दिया है.

ये टिटिहरियां मछुआरों की खास मददगार हैं. इनकी सहायता से मछुआरे यह पता लगाते हैं कि समुद्र में टूना मछलियों के झुंड कहां तैर रहे हैं. टिटिहरियां भी इन नन्ही मछलियों का शिकार करती हैं. सो मछुआरे जब इन्हें कहीं लहरों के ऊपर हवा में मंडराते देखते हैं तो भांप जाते हैं कि वहां पानी में टूना मछलियां मौजूद हैं.

मिनिक्कोय लक्षद्वीप का सबसे दक्षिणी द्वीप है. इसका नीला समुद्रताल विशाल और गहरा है. छोटे जहाज उसमें आसानी से प्रवेश कर सकते हैं.

तेरहवीं सदी के महान इतालवी यात्री मार्को पोलो ने मिनिक्कोय को 'स्त्रियों का द्वीप' कहा था. कारण, यहां के पुरुष मछली पकड़ने के लिए ज्यादातर समय समुद्र पर रहते थे. आज भी लगभग वही स्थिति है. पुरुष प्रायः मछली पकड़ने या मल्लाहों के रूप में जहाजों पर काम करने में व्यस्त रहते हैं और द्वीप पर ज्यादातर काम औरतें करती हैं – मेहनत-मजदूरी के काम भी, और दुकान-दफ्तर के काम भी.

पित्ति की नॉडी किस्म की टिटिहरियां

मिनिक्कोय के निवासियों की वेशभूषा और भाषा बाकी लक्षद्वीप-वासियों से भिन्न है.

यहां के पुरुष जीन्स और टी-शर्ट पहनते हैं तथा स्त्रियां लाल रंग के लंबे चोगे धारण करती हैं, जिन पर गले के पास नफीस कशीदाकारी की हुई होती है. वे सिर पर सफेद या काले कपड़े का टुकड़ा बांधती हैं. नन्ही बच्चियां भी नंगे सिर नहीं रहतीं. बाकी द्वीपों पर पुरुष लुंगी पहनते हैं और स्त्रियों की पोशाक है – कशीदा किया हुआ तंग ब्लाउज और उसके नीचे काची नाम का अधोवस्त्र, जिसे स्थिर रखने के लिए कमरपट्टा बांधा जाता है.

मिनिक्कोय के लोग महल नामक भाषा बोलते हैं. बाकी सब द्वीपों पर मुख्य रूप से मलयालम बोली जाती है.

ऐसा समझा जाता है कि मिनिक्कोय के लोगों के पूर्वज गुजरात से आ कर वहां बसे थे. उनमें से ज्यादातर 'टकरू' कहलाते हैं, जोकि शायद 'ठाकुर' शब्द का अपभ्रंश है. अधिकांश घरों में खटोले जैसा झूला होता है.

उनका परंपरागत नृत्य 'डांडी' कहलाता है और गुजरात के डांडिया-रास जैसा होता है.

लक्षद्वीप की स्त्रियां

शेष लक्षद्वीप की तरह मिनिक्कोय की भी समाज-व्यवस्था मातृमूलक है, यानी यहां पर वंश और उत्तराधिकार मां से चलता है. बाकी भारत की तुलना में यहां के समाज में स्त्रियों का ज्यादा ऊंचा स्थान-मान है.
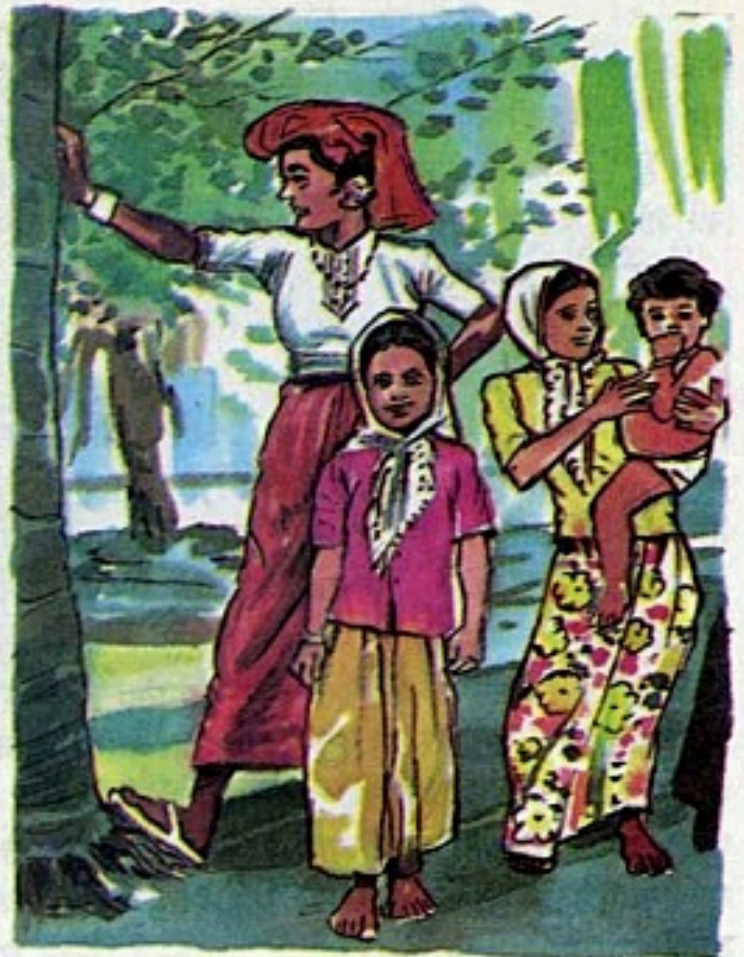
रवेरियों का लवा नृत्य. रवेरी पेशे से कलवार होते हैं और मिनिक्कोय के सबसे पुराने बाशिंदे माने जाते हैं.

सदाबहार

विशालपुर में चार्वाक नामक एक युवक था। वह बड़ा मेहनती था। कोई नया विषय उसे बताया जाता तो वह उसे सीखता था। वह कभी भी किसी से नाराज़ नहीं होता था। सदा हँसता रहता था, इसलिए सब उसे सदाबहार कहते थे।

उस गाँव में प्रारब्ध नामक धनिक आया। वह बहुत बीमार पड़ा पर भाग्यवश मौत के मुँह से बच गया। वैद्य की सलाह के अनुसार वह इस गाँव में आया।

प्रारब्ध ने गाँव में एक बड़ा घर किराये पर लिया। एक रसोइये व एक सेवक का भी प्रबंध कर लिया। हर रोज़ उसके घर गाँव के प्रमुख आया करते थे और गपशप करने के बाद लौटते थे।

किन्तु प्रारब्ध सदा चिंतित रहता था। गाँव के एक प्रमुख ने इसपर ध्यान दिया और कहा "इस गाँव में चार्वाक नामक एक युवक है, जो सदा संतुष्ट रहता है। आप उसे आपने घर में नौकरी पर रखेंगे तो उसे देखते हुए आप भी संतुष्ट रह पायेंगे।"

प्रारब्ध को गाँव के प्रमुख की बात सही लगी। उसने चार्वाक को अपने यहाँ नौकरी पर रख लिया। उसका काम होगा, सदा साथ रहे और अपने मालिक की आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहे।

चार्वाक, तन मन से प्रारब्ध की सेवाएँ करता था। जो भी आते, चार्वाक की कार्य-दक्षता की भरपूर प्रशंसा करते थे। इतना सब कुछ होते हुए भी प्रारब्ध की चिंता जैसी की तैसी बनी रही। उसने एक दिन चार्वाक से कहा "देखा न, सब प्रकार के सुखों की सामग्री है, किन्तु क्या लाभ। सदा दुखी रहता हूँ। विश्राम लिये बिना तुम काम करते रहते हो और हर हमेशा खुश रहते हो। क्या मैं जान सकता हूँ, तुम्हारी

प्रभाकर

इस तृप्ति का रहस्य क्या है?''

''इस संसार में आनंद के अलावा और कुछ नहीं। पर, मेरी समझ में नहीं आता कि आप क्यों दुखी व असंतृप्त रहते हैं ?'' चार्वाक ने पूछा।

प्रारब्ध ने कहा ''बचपन में मैं ज़ानता भी नहीं था कि दुख क्या होता है ? चिंता क्या होती है ? मेरी पूँजी सौ रुपये थे। मैंने इतनी छोटी रक़म से व्यापार शुरू किया। अब मैं करोड़पति हूँ। मैं बीमार पड़ा तो वैद्य की सलाह के मुताबिक हवा की तब्दीली के लिए इस गाँव में आया हूँ। मेरे परिवार के सदस्य घर व व्यापार संभाल रहे हैं। उन्हीं ने अकेले मुझे यहाँ भेजा। सब हैं, लेकिन आज मैं अकेला हूँ, मेरा अपना कोई मेरे साथ नहीं। इस स्थिति में भला मैं कैसे संतुष्ट रह सकूँगा। चिंता तो होगी ही।''

इसपर चार्वाक हँस पड़ा और कहा ''आपको तो इस बात पर खुश होना चाहिये। यद्यपि आप वहाँ नहीं हैं, किन्तु आपके लोग आपका व्यापार सुचारू रूप से संभाल रहे हैं। आप अपने लिए जितना खर्च करना चाहते हैं, खर्च कर सकते हैं।''

''किन्तु मेरे ही लोग मेरी सेवाएँ करे तो उससे जो तृप्ति मिलती है, वह तो कुछ और ही होती है'' प्रारब्ध ने कहा।

''हर दिन मुझे दस रुपये दे रहे हैं। पर, आपके लोगों में से हर कोई हज़ारों रुपये कमा रहा है। यह आपकी आमदनी ही हुई ना ?'' चार्वाक ने कहा।

''मुझे ऐसा सेवक नहीं चाहिये, जो हर दिन अपने कामों के लिए दस रुपये ही लेता है। मुझे तो ऐसा सेवक चाहिये, जो अपने कामों के लिए हज़ार रुपये ले। इसका मुझे रंज है कि मेरी इच्छा की पूर्ति नहीं हो रही है।'' प्रारब्ध ने कहा।

इसपर चार्वाक ने ज़ोर से हँसते हुए कहा ''महाशय, इस संसार में सबसे नीच वृत्ति है, सेवक वृत्ति। जिनको कोई काम करना नहीं आता, वे ही यह काम करते हैं। हर कोई पैसों के लिए ही काम करता है। धन पास हो तो दूसरों से सेवाएँ कराने की इच्छा होती है। आप जैसे धनिकों की सेवा सक्रम रूप से हो, यह मुझ जैसे सेवकों से ही संभव होगा। समर्थ आपके अपने लोग ऐसे काम नहीं कर सकेंगे।''

प्रारब्ध को इसका दुख है कि महाभारत,

रामायण आदि ग्रंथ पढ़ नहीं पाया। चार्वाक का विचार है कि काव्य-पठन आराम से बैठे लोगों के लिए हैं। वह अपने इस भाग्य पर बहुत ही संतुष्ट है कि उसे विश्राम भी करने का समय नहीं मिल रहा है।

चार्वाक के पास प्रारब्ध के हर प्रश्न का उत्तर था। अपने दुख को भुलाने के बदले, चार्वाक के संतोष से प्रारब्ध ईर्ष्या करने लगा। चार्वाक के हँसते चेहरे को देखकर उसकी चिंता दुगुनी हो गयी। एक दिन उसने यह सच्चाई गाँव के प्रमुखों से बतायी। एक प्रमुख ने कहा "आपको संतोष प्रदान करनेवाला मार्ग मिल गया। हर रोज़ उसे आप कोसते रहिये, उसके मन को अपनी बातों से दुखाइये। इससे उसके चेहरे की हँसी ग़ायब हो जायेगी तो आपका दुख भी ग़ायब हो जायेगा।"

तब से प्रारब्ध, चार्वाक को अकारण ही गालियाँ देने लगा, डाँटने-डपटने लगा। पर, उसपर इसका कोई असर नहीं पड़ा। आख़िर प्रारब्ध ने यहाँ तक कहा कि तुम बेशर्म हो, तुम कुत्ते हो।

चार्वाक ने हमेशा की तरह हँस दिया और अपने कामों में रत हो गया। एक और बार उसने चार्वाक को सुवर कहा। एक और बार भैंस कहा। फिर एक और बार गधा कहा। फिर भी चार्वाक हँसता रहा तो अंदर ही अंदर कुढ़ते हुए प्रारब्ध ने उससे कहा "मैं गालियाँ दे रहा हूँ और तुम हँस रहे हो।"

"कुत्ता विश्वास का दूसरा नाम है। सुवर दस अवतारों में से एक है। भैंस, गधा

सेवा-धर्म में उत्तम हैं, असमान हैं। मुझे तो लगा कि आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं। प्रशंसा पर संतुष्ट होना मानव का धर्म है" चार्वाक ने हँसते हुए कहा।

प्रारब्ध में आक्रोश भर आया। उसने ठान लिया कि किसी भी स्थिति में चार्वाक के संतोष को मिटा दूँगा। उसने खूब सोचा तो उसे एक उपाय सूझा। अब तक चार्वाक को वह गाली दे रहा था, जब कि वह अकेला है। कितनी भी गालियाँ दी जाएँ, किसी और को इसका पता नहीं चलेगा। औरों की उपस्थिति में गाली देने पर शांत स्वभाव का व्यक्ति भी उग्र बन जाता है, उसकी सहनशक्ति खो जाती है, वह आपे से बाहर हो जाता है। उसने अपने इस उपाय को कार्यान्वित करने के लिए एक दिन गाँव के

प्रमुखों की उपस्थिति में चार्वाक को खूब गालियाँ दीं। जो मुँह में आया, कह दिया। फिर भी चार्वाक हँसता हुआ अपना काम करते जाने लगा। इससे प्रारब्ध और भड़क उठा तो उसने और गालियाँ दीं।

चार्वाक ने तो इन गालियों को सह लिया, लेकिन गाँव के प्रमुखों में से सत्यवान नामक एक व्यक्ति बहुत नाराज़ हुआ। उसने चार्वाक से कहा, ''अरे चार्वाक , ये तुम्हें इतनी गालियाँ दे रहे हैं और तुम चुप हो ? काम छोड़कर क्यों नहीं चले जाते ?''

''मैं थोड़े ही मुफ़्त में काम कर रहा हूँ। पैसे ले रहा हूँ ना ?'' चार्वाक ने हँसते हुए कहा। एक क्षण रुककर फिर कहा ''ये साहब तो मेरे काम से खुश हैं। सदा गालियाँ देते रहते हैं, लेकिन क्या आज तक इन्होंने कभी कहा कि नौकरी छोड़कर चले जाओ। जब तक वे चले जाने को नहीं कहते तब तक काम छोड़कर किसी और के घर में काम करना अधर्म है।'' हँसते हुए उसने कहा।

सत्यवान कुछ और कहने ही वाला था कि प्रारब्ध ने उसे रोका और कहा ''ठहरिये, अब मैं जान गया हूँ कि यह सदा बहार क्यों है। नित्य क्यों संतुष्ट रहता है। वह हर विषय की अच्छाई को ग्रहण करता है और बुराई को त्यजता है। जो भी काम वह करता है, उसे अपनी जिम्मेदारी मानकर करता है। वह उसे परोपकार नहीं मानता। उससे जो बन पाता है, करता है। अन्यों से आवश्यकता से बढ़कर प्रतिफल की आशा नहीं रखता। अपने पास जो है, उसी में संतृप्त रहता है। जो नहीं है , उनके लिए दुखी नहीं होता, दौड़-धूप नहीं करता। इसी कारण वह सदाबहार है, नित्य संतुष्ट है। उसकी तरह रह पाना औरों के लिए शायद संभव नही होगा, पर उसकी तरह रह सकने की कोशिश करना हर एक का धर्म व कर्तव्य है। इससे चिंता कुछ हद तक अवश्य ही घटेगी।''

इस घटना के बाद उसने चार्वाक के संतोष को मिटाने की कोशिश कभी नहीं की। उसकी सदा ही कोशिश रही कि अपनी चिंता कैसे दूर करूँ। कह सकते हैं कि इस दिशा में उसने कुछ हद तक कामयाबी भी पायी।

चन्दामामा

सुवर्ण रेखाएँ -७
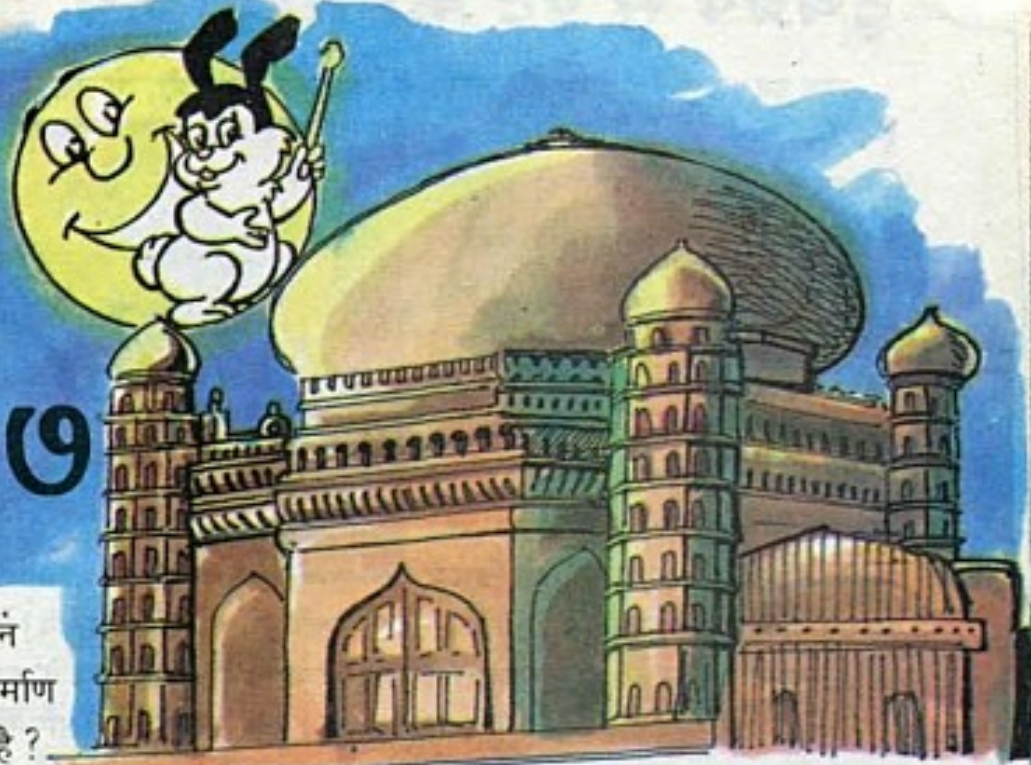
१. यह बीजापूर के शासक और एक महान व्यक्ति की समाधि है। इस समाधि का निर्माण किसने किया और इसकी विशिष्टता क्या है ?

२. असम के एक छोटे-से गाँव में, सितंबर-अक्तूबर के बीच बरफ से भरी रातों में, जब कि चाँदनी न हो, कुछ पक्षी थोड़ा-सा भी प्रकाश दिखायी पड़ने पर हठात् नीचे आ जाते हैं। बाद के कुछ दिनों तक परवशता में खो जाते हैं और विचित्र रूप से व्यवहार करने लगते हैं। आज तक कोई जान नहीं पाया कि उनके इस विचित्र व्यवहार का क्या कारण है। यह विचित्र घटना घटनेवाले उस गाँव का क्या नाम है ?

३. यहाँ डैनोजार का शरीर पाँच भागों में है। इसे अलग-अलग कतरिये और ऐसा सजाइये, जिससे हाथी का चित्र बने।

४. पुष्प की पंखुड़ियों के आकार में यह इमारत बनी है। यह दिल्ली में है। यह प्रार्थना-मंदिर है। एक पर्शियन प्रवक्ता द्वारा स्थापित अत्याधुनिक धर्म से संबंधित है यह मंदिर। उस धर्म का क्या नाम है ?

टूथब्रष से पैंट को छिड़किये

एक टूथब्रष हो, कुछ रंग हों, थोड़ी-सी कल्पना-शक्ति हो, तो बस, आप एक सुंदर चित्र की सृष्टि कर सकते हैं।

सरल, छोटे-छोटे नमूनों को कतरिये। ड्रायिंग पेपर पर सुन्दर रूप से सजाइये। सिक्कों या चटखनियों जैसी भारी चीजों से ऐसा कीजिये, जिससे वे कागज पर चिपक-सा जाएँ।

एक थाली में रंग लीजिये और उसे पानी में मिलाइये। टूथब्रष के ब्रिजिल्स को उस रंग में डुबोइये। टूथब्रष को उल्टे पकडकर ड्रायिंग पेपर पर अंगूठे से चित्र में दिखायी गयी पद्धति के अनुसार ब्रिजिल्स को पीछे खींचिये और फिर छोड़िये। ऐसा करने से ड्रायिंग पेपर पर रंग छोटे-छोटे बिन्दुओं में छिड़कता है। जब पूरा कागज भर जाता है, तब कागज के ऊपर जो नमूने हैं, निकाल दीजिये। अब आप सुंदर चित्रों को देखेंगे। इसके लिए आप कपड़ों के रंगों को तथा फोटोट्रास्परेंट स्याहियों का भी उपयोग कर सकते हैं। पहले एक रंग से शुरू कीजये। बाद अनेकों रंगों का उपयोग कर सकते हैं। ब्रष को कागज़ पर ले जाने के कारण पतले बिन्दु बनते हैं। जब विभिन्न रंग छिड़काये जाते हैं तब नमूनों का आकर्षण देखते ही बनता है।

अभिवादन पत्र में
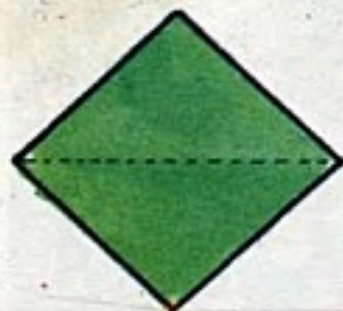
१. चतुराकार के रंगीले काग़ज को लीजिये और चित्र में दिखायी गयी पद्धति के अनुसार रेखाओं को तह कीजिये।

२. कागज के आधे हिस्से को तीन तिहाई कतर डालिये। उसके बाद मध्य मार्ग काटिये।

३. फिर कागज़ का एक कोना थोड़ा-सा मोड़िये। उस मोड़ को आर-पार पीछे और आगे तह करते जाइये।

४. अब आपका बनाया हुआ पेड़ तैयार है। इसको अभिवादन पत्र के बीच चिपकाइये। पेड़ घना व विशाल दीखे, इसके लिए आपको करना होगा, ऊपर की रेखाओं की कुछ तहों को चिपकाइये, जिससे तहें नीचे आ जाएँ।

तस्वीरों की खिचड़ी

सुप्रसिद्ध सिंदबाद की यात्राओं की चित्रों भरी एक कहानी यहाँ दी गयी है। किन्तु वे चित्र खिचड़ी की तरह मिली-जुली हैं। उन्हें सही क्रम में रखिये।

तीन आसान क्रमों में खड्गमृग की तस्वीर खींचिये

सुवर्ण रेखाएँ : ६ के उत्तर

उत्तर

१. कारेल कापेक। उन्होंने आपने नाटक आर.यू.आर. में पहले पहल रोबोट शब्द का उपयोग किया।

२. माग्लेव रेलगाड़ियों में पहिये नहीं हैं। 'माग्नेटिक लेवियशन' का संक्षिप्त रूप ही है माग्लेव। ये यद्यपि प्रत्येक पटरियों पर चलती हैं पर अति शक्ति भरी चुंबक शक्तियों के कारण पटरियों की तरफ़ आकर्षित होती हैं।

३. लाल, हरा, नील रंग पर आधारित इन तीनों रंगों के बिंदु व रेखाएं मिलकर टी.वी. पर रंगबिरंगे चित्रों को दिखाते हैं।

४. बेंजेमिन फ्रांक्लिन। उनके अनुसंधानों का परिणाम है ''लैटनिंग कंडक्टर'' आविष्कार। इस आविष्कार से उन्होंने बहुत-से लोगों को मरने से बचाया।

५.शताब्दी साल के सिद्धांतों की छूट है २००० वाँ साल। क्योंकि ४०० से विभाजित किये जानेवाले साल लीप साल हैं।

६. नौका किस हद तक बोझ से भरी जा सकती है, यह जानने के लिए नौका के बाहर एक रेखा खिंची हुई होती है, जिसका नाम है, 'प्लेमसोल लाइन'। पानी इस रेखा के पार न हो।

७. भीकर मानव का नाम फ्रांकेन्स्टीन कहा जाए तो वह गलत है। उस भीकर मानव के सृष्टिकर्ता थे वैज्ञानिक फ्रांकेन्स्टीन।

रोबोट्स का हिसाब

हर दिन १८ मोटरकारों को बनानेवाले ९ आल्फा रोबोट्स २७ कार बनानेवाले १८ बीटा रोबोट्स तो नौ कार बनानेवाले २७ गामा रोबोट्स

अर्जुन जब इंद्र के यहाँ था तब रोमश नामक महर्षि तीन लोकों में संचार करता हुआ स्वर्ग-लोक पहुँचा। इंद्रसिंहासन पर इंद्र के साथ ही बैठे अर्जुन को देखकर अति आश्चर्य में डूब गया। सोचा "इसने बड़ी तपस्या की होगी, इसी कारण इंद्र के सिंहासन पर बैठने की योग्यता प्राप्त की।"

उस महर्षि के आश्चर्य को देखते हुए इंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा "मुनीश्वर, यह अर्जुन साधारण मानव नहीं है। पूर्व जन्म में नर नामक महर्षि था। नारायण नामक महर्षि के साथ हज़ारों सालों तक बदरिका वन में तपस्या की। ऋषि नारायण अपने पूर्व जन्म में कपिल महामुनि थे। नर-नारायण दोनों भूभार को घटाने के लिए अब अर्जुन व कृष्ण बनकर जन्मे। पाताल के निवातकवच देवताओं को सता रहे हैं। उनका नाश अर्जुन करेगा। इसीलिए इसे यहाँ बुलवाया। आप भूलोक जाइये और काम्यक वन में निवास करते हुए धर्मराज से कहिये कि अर्जुन स्वर्गलोक में नृत्य-गान का प्रशिक्षण पा रहा है और सुखी है।"

रोमश महामुनि, इंद्र के कहे अनुसार भूलोक आने निकल पड़ा।

व्यास ने धृतराष्ट्र से बताया कि अर्जुन स्वर्ग में पहुँच गया और दिव्यास्त्रों को पाया। धृतराष्ट्र ने तुरंत संजय को बुलाकर कहा 'सुना संजय, अर्जुन ने स्वर्ग में जाकर दिव्यास्त्र पा लिये। देखना है कि दुर्योधन की दुर्बुद्धि के कारण कितनी बड़ी विपत्ति आनेवाली है। पता नहीं, बेचारी प्रजा को कितने कष्टों का सामना करना पड़ेगा। धर्मराज और अर्जुन दोनों मिलकर तीनों लोकों पर विजय पाने की शक्ति रखते हैं। अब मेरे पुत्रों की मृत्यु निश्चित है।" दुखी होता हुआ बोला।

पांडवों की तीर्थयात्राएँ - ३०

"इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं। द्रौपदी सभा में लायी गयी, सब प्रकार से उसका अपमान किया गया। इस पृष्ठभूमि में अगर पांडव प्रतिशोध लेना चाहें, आपके पुत्रों को मारना चाहें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है।" संजय ने कहा।

दौम्य ने धर्मराज को परामर्श दिया कि अर्जुन के लौटते तक पांडव तीर्थयात्राएँ करें। धर्मराज अपनी पत्नी द्रौपदी, भाइयों व ब्राह्मण समूह को लेकर तीर्थयात्रा पर निकलने ही वाला था कि महर्षि रोमश ने आकर कहा "इंद्र की सुधर्म सभा में गया। अर्जुन, इंद्र के साथ-साथ उसके सिंहासन पर आसीन था। यह दृश्य देखकर मैं आश्चर्य में डूब गया। इंद्र ने मेरे द्वारा आपको समाचार भेजा कि अर्जुन वहाँ सुखी है। इसी कार्य पर मैं यहाँ आया। इंद्र ने अर्जुन को अनेकों दिव्यास्त्र दिये। अब चित्रसेन नामक गंधर्व के पर्यवेक्षण में वह नृत्य-संगीत की शिक्षा पा रहा है। इंद्र ने चाहा कि तुम तीर्थयात्राएँ करो। मैंने स्वयं इसके पहले दो बार तीर्थयात्राएँ कीं। तीसरी बार तुम्हारे साथ-साथ आऊँगा।"

धर्मराज को यह सुनकर बहुत आनंद हुआ। जिस कार्य पर अर्जुन गया, वह सफल हुआ। जिन तीर्थ यात्राओं पर स्वयं जाना चाहता था, उन्हीं तीर्थयात्राओं पर जाने के लिए इंद्र ने भी संदेश भेजा। तीर्थयात्राओं पर निकलने के पहले धर्मराज ने अपने साथ जो समूह था, उनमें से कुछ लोगों को हस्तिनापुर और कुछ लोगों को द्रुपद के यहाँ भेजा। इंद्रसेन आदि कुछ ही लोगों को अपने साथ रहने दिया, जिनके पास आयुध, कवच आदि थे।

तीर्थयात्राएँ करते हुए पांडवों ने गोमती तीर्थ, कन्या तीर्थ, गोतीर्थ, बाहुदा नदी तीर, त्रिवेणी, गया क्षेत्र आदि का संदर्शन किया। अगस्त्य के आश्रम में जाकर अगस्त्य की कथा जानी, जो यों है।

मणिमंत नगर में इल्वल, वातापी नामक दो भाई थे। वे ब्राह्मणों को आतिथ्य देते और उन्हें मार डालते थे। वातापी बकरी का रूप धारण करता था। इल्वल उस बकरी को मारकर ब्राह्मण अतिथि को खिलाता था और कहता था कि वातापी, आ जाओ, वातापी उस ब्राह्मण का पेट चीरता हुआ बाहर आता था। ब्राह्मण मर जाता था।

अगस्त्य महामुनि ने विदर्भ के राजा की पुत्री लोपामुद्रा से विवाह रचाया । उसकी इच्छा-पूर्ति के लिए धन समेटने अगस्त्य निकल पड़ा । वह तीन राजाओं के पास गया । किन्तु उन राजाओं की इतनी आमदनी नहीं थी कि वे उसे धन दे सकें । अगस्त्य को ज्ञात हुआ कि मणिमंत के नागरिक वातापी व इल्वल के पास अपार धन है । उनसे धन माँगने वह वहाँ गया ।

इल्वल ने अपनी आदत के अनुसार वातापी को बकरी के रूप में बदल दिया और उसका मांस अगस्त्य को खाने को दिया । अगस्त्य ने माँस खाया और डकार ली । इल्वल ने पुकारा "वातापी, आ जा ।"

अगस्त्य ने कहा, "अब वातापी कहाँ रह गया । वह तो जीर्ण हो गया ।" इल्वल का चेहरा फीका पड़ गया । उसने अगस्त्य को तथा उसके साथ आये तीनों राजाओं को धन देकर भेज दिया ।

धर्मराज ने अगस्त्य के बारे में यह कहानी भी सुनी । एक बार विंध्यपर्वत ने सूर्य से कहा "तुम क्यों सदा मेरु पर्वत के चारों ओर ही घूमते रहते हो । मैं उससे बड़ा पर्वतराज हूँ । मेरे चारों ओर घूमो ।"

"मैं जान-बूझकर मेरु पर्वत के चारों ओर घूम नहीं रहा हूँ । मेरे लिए जो मार्ग निर्धारित है, उसी मार्ग पर घूम रहा हूँ ।" सूर्य ने कहा ।

विंध्य क्रोधित हो गया और सूर्य-चंद्र व ग्रहों के मार्ग में रुकावट बनकर विस्तृत होकर खड़ा हो गया । लोक अंधकारमय हो गया । तब देवता अगस्त्य के पास आये और विनती की "मुनीश्वर, आपके शिष्य विंध्य ने लोक को अस्तव्यस्त कर दिया । उसे अपने वश में रखिये ।"

सब अगस्त्य ने लोपामुद्रा सहित विंध्य

पर्वत के पास जाकर उससे कहा "मैं एक मुख्य कार्य पर दक्षिण जा रहा हूँ। रास्ते से हटो।" विंध्य ने अगस्त्य को साष्टांग नमस्कार किया और राह दी। अगस्त्य ने कहा "जब तक मैं नहीं लौटता तब तक ऐसे ही रहो।" वह महामुनि दक्षिण से लौटा भी नहीं और विंध्य ने अपना सिर उठाया भी नहीं।

कालकेय नामक राक्षस समुद्र में रहते थे। रात के समय वे भूमि पर आते थे और ब्राह्मणों को सताते थे। देवता समुद्र में पहुँचकर उनको मार नहीं सके। वे अगस्त्य की शरण में गये। तब उस मुनि ने समुद्र का संपूर्ण जल एक ही घूँट में पी लिया। कालकेय अब बाहर आ गये। देवताओं ने उनसे युद्ध किया और अनेकों को मार डाला। मौत से जो बच गये, वे कालकेय पाताल भाग गये। उस समय जो समुद्र सूखा पड़ गया, वह पुनः जलमय हुआ, तब भगीरथ गंगा को भूमि पर ले आया।

अगस्त्य के आश्रम से निकलकर पांडव अनेकों तीर्थस्थान गये। वे कौशिकी नदी के तट पर पहुँचे और वहाँ के विश्वामित्र का आश्रम देखा। नदी के उस पार के विभांडक के पुत्र ऋष्यश्रृंग की कथा भी उन्होंने सुनी।

अंगदेश का शासक रोमपाद, दशरथ का मित्र था। उसने ब्राह्मणों के विरुद्ध द्रोह किया तो ब्राह्मणों ने उस राज्य को छोड़ दिया और अन्य राज्यों में चले गये। उसके बाद वहाँ बारिश नहीं हुई, जिससे अकाल पड़ गया। तब रोमपाद ने अपने मित्रों की सलाह के अनुसार सुंदरियों को ऋष्यश्रृंग के पास भेजा। उन सुंदरियों से आकर्षित ऋष्यश्रृंग उस राज्य में आया। रोमपाद ने अपनी पुत्री शांता का विवाह उससे करवाया। ऋष्यश्रृंग के पाँव रखते ही अंग देश में सदा की तरह वर्षा होने लगी।

पांडव यों अनेकों तीर्थस्थानों का संदर्शन करते रहे। वे महेंद्र पर्वत के पास गये। वहाँ अकृतवर्ण ने धर्मराज को परशुराम की कथा सुनायी। हैहयवंशज कार्तवीर्य ने दत्तात्रेय का वर पाया, जिसके फलस्वरूप उसे हज़ार हाथ प्राप्त हुए। बल के मद में अंधा होकर उसने कई उपद्रव मचाये। एक बार कार्तवीर्य परशुराम के पिता जमदग्नि के आश्रम में आया। आश्रम का ध्वंस किया। हेम धेनु को पकड़कर ले गया।

जैसे ही परशुराम आश्रम लौटा, विषय जाना और कार्तवीर्य से युद्ध करके उसे मार डाला। उसके बाद कार्तवीर्य के पुत्रों ने आश्रम में प्रवेश किया, जब कि जमदग्नि अकेला ही था। उन्होंने उसका गला काट दिया और चले गये। तब परशुराम ने, इक्कीस बार विश्व भ्रमण किया और जो-जो क्षत्रिय मिला, उसे मारता रहा। यों अपने प्रतिशोध की प्यास बुझायी।

पांडव जब प्रभास तीर्थ पहुँचे तब यह समाचार पाकर कृष्ण, बलराम आदि और यादव भी उनसे मिलने आये। यादवों ने पांडवों को विश्वास दिलाया कि पांडव युद्ध में अवश्य ही कौरवों का अंत करेंगे और राजसिंहासन पर आसीन होंगे।

यादव जब द्वारका लौटे तब पांडव पुनः तीर्थ यात्राओं पर निकल पड़े। वे अंत में गंधमादन पर्वत पर पहुँचे। उन्होंने निर्णय लिया कि वे वहीं अर्जुन की प्रतीक्षा में रहेंगे। वह महापवित्र प्रदेश था। समस्त पुण्यस्थलों में से उत्तम पुण्यस्थल था। वहाँ पांडवों ने नरकासुर की हड्डियों का ढेर देखा।

जब वे गंधमादन पर्वत पहुँच ही रहे थे, तब ज़ोर की हवा चली। धूल भी बहुत उड़ी, जिसके कारण अंधेरा छा गया। फिर भारी वर्षा हुई। बिजली चमकी। अपनी रक्षा के लिए वे तितर-बितर हो गये। सबेरे तक वर्षा रुक गयी। वातावरण प्रशांत हो गया। किन्तु, पैदल चलने के कारण, भारी वर्षा की वजह से, सर्दी में काँपती हुई द्रौपदी बेहोश हो गयी। नकुल ने सहारा दिया, नहीं तो वह पत्थरों पर गिर पड़ती। धर्मराज ने द्रौपदी का सिर अपनी जाँघ पर रखा और बहुत देर तक आँसू बहाता रहा। उन सबने उसकी सेवा-शुश्रूषाएँ की। रास्ता पत्थरों और कांटों से भरा हुआ था। आगे बढ़ना संभव नहीं था। तब भीम ने अपने पुत्र घटोत्कच की याद की। वह अपनी राक्षस -सेना सहित वहाँ आया। घटोत्कच ने पाँडवों और द्रौपदी को अपने कंधों पर बिठा लिया। शेष लोगों को और राक्षसों ने उठा लिया। बड़े ही वेग से आगे बढ़ने लगे। जब वे कैलास के समीप ही स्थित बदरिकाश्रम पहुँचे तब राक्षसों के कंधों से उतर गये। वहाँ गंगा बह रही थी। उन्होंने उस पवित्र नदी में

स्नान किया। वहाँ के मुनिगणों ने पाँडवों को कंद-मूल, फल देकर उनका अतिथि-सत्कार किया।

छे दिन वहाँ ठहरने के बाद उन्होंने वायु में एक दिव्य सुगंधि का अनुभव किया। इतने में पांडवों के मध्य एक अपूर्व पुष्प आ गिरा। वह हजार पंखुड़ियोंवाला लाल कुमुद पुष्प था। बहुत ही सुंदर दीख रहा था और अद्भुत सुगंधि व्याप्त कर रहा था। द्रौपदी ने उस पुष्प को अपने हाथ में लेकर भीम से कहा "इसे मैं धर्मराज को दूँगी। ऐसे पुष्पों को ले जाकर हम इन्हें काम्यकवन में सुरक्षित रखेंगे। मेरे लिए और पुष्प ढूँढकर ला सकते हो ?"

भीम द्रौपदी की इच्छा की पूर्ति के लिये निकल पड़ा। उसने गदा, धनुष और बाण लिये और इसी दिशा में जाता रहा, जिस दिशा से हवा चलने के कारण सुगंध पुष्प आ गिरा। कोयलों का कुहकना, भ्रमरों की झंकारें, प्रपातों की धाराओं की मधुर ध्वनियाँ उसके मन को उल्लसित कर रही थीं। रास्ते में जो पेड़ रुकावट बने खड़े थे, उन्हें वह काटता गया। बीच-बीच में सिंहनाद करता हुआ वह आगे बढ़ता गया। एक जगह पर उसने केलों का एक बहुत बड़ा बाग़ देखा। उन पेड़ों में से होते हुए भीम ने पुनः सिंहनाद किया, जिसे सुनकर जल-पक्षियों का झुंड आकाश में उड़ा। आकाश में उड़ते हुए उन पक्षियों को देखकर भीम ने जान लिया कि वहाँ पानी है। उस दिशा में जाकर वह एक सरोवर के पास पहुँचा।

भीम ने उस सरोवर में स्नान करके अपने तन को शीतल किया। फिर वह केलों के बाग़ में से होता हुआ कुछ दूर गया। उसने अपनी भुजाओं को थपकी दी और सिंहनाद किया। उस केले के बाग़ में हनुमान था। सिंहनाद सुनकर वह जान गया कि यह भीम का सिंहनाद है। उसे इस बात पर बड़ी प्रसन्नता हुई कि भीम से मिलनेवाला हूँ। जान-बूझकर हनुमान रास्ते के आर-पार लेट गया। अपनी पूँछ को झंडे की तरह ऊपर उठा लिया और ताली बजायी, जिससे दिशाएँ गूँज उठीं।

इस ध्वनि को सुनकर भीम हनुमान के पास आया।

'चन्दामामा की ख़बरें

हाथी को 'रेडियो कालर'

जंगल में घूमते हुए हाथियों की निगरानी कैसे हो ? हर हमेशा उनके साथ-साथ रहना था उनके साथ जाते रहना संभव नहीं है । इसलिए छोटे-से रेडियो के साधन से सज्जित एक कालर को उसके गले में बाँधा जा रहा है । रेडियो का रिमोट कंट्रोल होता है । इससे हाथियों का पर्यवेक्षण संभव हो पाता है । हाल ही में पश्चिम बंगाल के जल्दपारा जंतु शरणालय में देखा गया कि एक हथनी, हाथियों के एक झुंड को अपने साथ ले जा रही है । एक हाथी को नशीली दवा दी गयी और रेडियो कालर उसके गले में बाँध दिया गया । अब सब हाथी, हाथी का अनुसरण करने लगे । इससे 'वन्य मृग शाखा' के अधिकारियों के लिए इस झुंड का पर्यवेक्षण करना आसान काम हो गया । हाथी को कालर से सज्जित करना यह पाँचवी बार है । पर इसके पहले जो हाथी अलग-अलग घूमते रहते थे, उनके गले में ऐसे कालर बाँधे गये ।

सुंदर ऊँट

'बिंटि होमलोल' में एक ऊँट खरीदा गया ३,९०,००० अमेरिकन डालरों में (लगभग १.३७ करोड़ रुपये) बहुत-से गल्फ देशों में ऊँटों की दौड़ की स्पर्धाएँ बहुत ही प्रसिद्ध क्रीडाएँ है । ओमन में ही बहुत-से ऐसे ऊँट हैं, जो बहुत ही तेज़ी से दौड़ सकते हैं । यहाँ के एक ऊँट का दाम साधारणतया ८०० डालर हैं । अब तक जिस ऊँट को खरीदा गया, उसका अत्यधिक दाम है २,६०,००० डालर । किन्तु 'बिंटि' खरीदा गया ३,९०,००० डालरों में । इसे खरीदनेवाला युनैटेड अरब एमिरेटस का एक अज्ञात व्यापारी है । उसका मानना है कि यह ऊँट सबसे अधिक वेग से दौड़ने की शक्ति रखता है । इसीलिए वह यह कहता हुआ फिरता रहता है कि यह 'सुंदर ऊंट' है, जिसका मैं मालिक हूँ ।

भारतीय चित्रों को अत्यधिक मूल्य

'सौथवीस आक्शन कंपनी' लंदन की सुप्रसिद्ध नीलामी कंपनी है । अक्तूबर, ८ को भारतीय चित्रकारों के १५० चित्रों की यहाँ नीलामी हुई । केरल के सुप्रसिद्ध चित्रकार राजा रविवर्मा (१८४८-१९०६) से लेकर आज के सुप्रसिद्ध भारतीय चित्रकार एम.एफ.हुसेन तक के अनेकों चित्रकारों के चित्र यहाँ प्रदर्शित हुए । उस दिन नीलाम किये गये दस चित्रों में से आठ चित्र रविवर्मा के ही थे । एक चित्र का मूल्य निर्धारित हुआ २,२०,००० रुपये । किन्तु नीलामी में यह चित्र खरीदा गया १४,१६,२०० रुपयों में । इसी चित्र को अधिक दाम देकर उस दिन खरीदा गया । उनके शेष सात चित्रों को खरीदा गया १९,२०,००० रुपयों में । रवींद्रनाथ टैगोर का एक चित्र खरीदा गया ९,१३,००० रुपये देकर । हुसेन के चित्रों में से एक भी चित्र इतना दाम देकर खरीदा नहीं गया । विशेष बात यह है कि इन चित्रों को खरीदनेवाले कोई और नहीं बल्कि वहाँ बसे भारतीय ही हैं ।

'म्याक' पुलिसमेन

कालिफोर्निया के शान जोन पुलिस विभाग का रोबोट पुलिसमेन है । 'आफीसर म्याक' । अन्य पुलिसवालों की तरह इसने भी अक्तूबर मास के आरंभ में अपना पद स्वीकार किया । 'म्याक' गलियों में घूमता रहता है और लोगों को बताता रहता है कि अपराध कैसे रोके जाएँ ।

‘चन्दामामा’ परिशिष्ट - ९७

हमारे देश के वृक्ष

बेल

हमारे देश में पवित्र माने जानेवाले वृक्षों में से बेल वृक्ष बहुत ही महत्व रखता है। शिव की पूजा के लिए इसके पत्तों का उपयोग होता है। बेल के पत्ते कोमल व मोटे होते हैं। शिव-मन्दिरों के प्रांगणों तथा बड़े-बड़े उद्यानवनों में इन्हें पनपाते हैं। सहज ही, आप ही आप ये पनपते हैं। कहा जाता है कि बेल का फल भी पवित्र है। इसे समृद्धि व संपदा का चिह्न मानते हैं। इसीलिये इसके फल को श्रीफल भी कहते हैं। हिन्दी, बंगाली, मराठी भाषाओं में इसे ‘बेल’ कहते हैं। गुजराती में ‘बिली’ तमिल व मलयालम भाषाओं में ‘बिल्वं’ कहा जाता है। तेलुगु में इसे ‘बिल्व वृक्ष’ तथा ‘मारेडु’ कहते हैं।

हमेशा हरे-भरे दीखनेवाले बेल के वृक्ष दस मीटरों की ऊँचाई तक पनपते हैं। पेड़ की छाल मोटी और कांटेदार होती है। टहनियों में गाँठें होती हैं। टहनियाँ टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं। सर्दी के दिनों में इसके पत्ते झड़ते हैं। वसंतकाल के आते ही इसमें घने कोंपले निकलते हैं।

कोमल हरे व श्वेत रंग के फूलों से सुगंधि आती है। इसका छिलका सख्त होता है। इसके अंदर का गूदा खा सकते हैं। सूखे हुए गूदे को शक्कर के साथ छाछ में मिलाते हैं और स्वादिष्ट पेय बनाकर पीते हैं। बेल के फलों, पत्रों, छालों तथा जड़ों में औषधि -गुण हैं। ये वृक्ष भारत भर में व्याप्त हैं।

नारंगी तथा नींबू के पेड़ों की तरह बेल वृक्ष भी ‘‘रुहासी’’ जाति से संबंधित है।

हमारे देश के ऋषि

अस्तीक

मानसादेवी व जरात्कार मुनियों के पुत्र थे अस्तीक । च्यवन से इन्होंने विद्याभ्यास पाया । मानसादेवी कश्यप मुनि की पुत्री थीं । उन्हें सर्पों पर अधिकार था । एक बार सर्प घोर विपत्ति में फँस गये ।

अर्जुन का पोता परीक्षित आखेट करने अरण्य गया था । वहाँ वह जिस मृग का पीछा कर रहा था, वह शमीक मुनि के आश्रम की ओर गया । राजा वहाँ गया और मुनि से उस मृग के बारे में पूछताछ की । ध्यान-मग्न होने के कारण मुनि ने उसके प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया । क्रोध और अपना मानसिक संतुलन खो जाने की वजह से राजा ने पास ही पड़े हुए मरे सर्प को उठाया और उसे मुनि के गले में डाल दिया । शमीक मुनि के पुत्र श्रृंगि ने यह दृश्य देखा तो क्रोधित होकर शाप दिया कि दुरहंकारी यह राजा सात दिनों के अंदर सर्प के डसने से मर जाए ।

परीक्षित को जब मालूम हुआ कि उससे कितनी बड़ी गलती हुई, तो उसे बड़ा दुख हुआ । सर्पों से बचने के लिए उसने एक ऐसा भवन बनवाया, जहाँ सर्पों का प्रवेश असंभव है । वह उस भवन में रहने लगा । भवन के चारों ओर पहरेदार तैनात हुए । फिर भी, तक्षक नामक सर्पराज छोटे-से कीड़े के रूप में परिवर्तित हुआ और एक फल में प्रवेश किया । वह फल अन्य फलों के साथ भवन में लाया गया । सातवें दिन जब परीक्षित राजा ने उस फल को खाने के लिए चीरा तो उस फल से निकले सर्पराज ने उसे डस लिया और उसे मृत्यु-लोक भेज दिया ।

तक्षक की इस चर्या को देखकर परीक्षित का पुत्र जनमेजय बहुत ही क्रोधित हुआ । उसने संपूर्ण सर्पवंश के विनाश के लिए सर्पयज्ञ किया । मुनियों के मंत्र-पठन के कारण सर्प जगह-जगह से आते रहे और होम कुंड में गिरकर मरते रहे । तक्षक घबराकर इंद्र के सिंहासन से चिपक गया । फिर भी सर्पयज्ञ के प्रभाव के कारण सिंहासन पर आसीन इंद्र सहित, तक्षक होमकुंड की तरफ़ बढ़ता गया ।

इस दृश्य को देखते हुए देवता भयभीत हो गये । वे सब मानसादेवी के पास गये और इस विपत्ति से बचाने की प्रार्थना की । मानसादेवी ने, अपने पुत्र अस्तीक से कहा कि इस सर्पयज्ञ को रोका जाए ।

अस्तीक, जनमेजय के पास गया । मुनिकुमार ने अपनी प्रतिभा तथा विवेक से जनमेजय को आकर्षित किया । उसकी अच्छी बातों से संतुष्ट व मुग्ध राजा ने अस्तीक से कहा कि कहो, तुम्हें क्या वर चाहिये । अस्तीक ने सर्पयज्ञ को रोकने के लिए कहा । अपने दिये हुए वचन के अनुसार जनमेजय ने यज्ञ को रोक दिया । तक्षक तथा शेष सर्प मरने से बच गये । कुछ लोगों का विश्वास है कि भक्तिपूर्वक अस्तीक का स्मरण करने पर सर्पों से कोई हानि नहीं पहुँचती ।

क्या तुम जानते हो?

१. 'वंदेमातरं' गीत के रचयिता कौन हैं ?
२. संसार भर में सबसे छोटा स्वतंत्र देश कौन-सा है ?
३. सूरज के चारों ओर कितने ग्रह घूमते रहते हैं ?
४. उस नहर का क्या नाम है, जो इंग्लैंड को , यूरोप से अलग करता है ?
५. भारत का राष्ट्रीय पुष्प क्या है ?
६. 'मिकी मौस' और 'डोनाल्ड डक' के सृष्टिकर्ता कौन हैं ?
७. विदेशी वस्तुओं पर डाली जानेवाली चुंगी को क्या कहते हैं ?
८. अमेरीका के करेन्सी (मुद्रा) का नाम क्या है ?
९. नर्स के पेशे के स्थापक कौन हैं ?
१०. भारतीय संसद की दोनों सभाओं के नाम क्या हैं?
११. शतरंज की पाटी में कितनी लकीरें होती हैं ?
१२. सूर्यरश्मि से लब्ध होनेवाले विटामिन का क्या नाम है ?
१३. किस देश में अधिकाधिक सोना मिलता है ?
१४. सफ़ेद झंडे का उपयोग किस स्थिति में होता है ?
१५. हमारे सौरमंडल में सबसे बड़ा ग्रह कौन-सा है ?
१६. किन्हें 'नैटिंगेल आफ इंडिया' कहते हैं ?
१७. जंतुओं में से सबसे ऊँचा जंतु कौन-सा है ?
१८. ओलंपिक क्रीडाएँ कितने सालों में एक बार होती हैं ?

उत्तर

१. बंकिमचंद्र चटर्जी
२. रोम का वाटिकन सिटी
३. भूमि को मिलाकर नौ
४. इंग्लीष चानल
५. कमल
६. वाल्ट डिजनी
७. कस्टम्स ड्यूटी
८. डालर
९. फ्लोरेन्स नैटिंगेल
१०. लोकसभा, राज्यसभा
११. ३२ काले ३२ सफ़ेद
१२. डी विटामिन
१३. दक्षिण अफ़्रीका
१४. समझौता करने की
१५. गुरुग्रह
१६. सरोजिनी नायुडु
१७. जिराफी
१८. चार सालों में एक बार

चप्पल-पच्चीस पैसे

चंद्रभानु हेलापुरी का निवासी था। बरतन खरीदने हाट जाने निकला। चूंकि उसके चप्पल पुराने थे, इसलिए एक चप्पल के आगे का हिस्सा टूट गया। सोचा कि जब हाट जा ही रहा हूँ, तो नये चप्पल भी खरीद लूं।

रास्ते में बहुत ही पुराना मंदिर था। उससे थोड़ी ही दूर पर एक दूकान थी, जहाँ चप्पलों की जोड़ियाँ क़रीने से रखी हुई थीं। यह देखकर चंद्रभानु ने निश्चय कर लिया कि हाट में जाने के पहले ही नये चप्पल खरीद लूँ। वह दुकान के सामने जाकर खड़ा हो गया। वहाँ एक तख़्ते पर लिखा हुआ था कि चप्पलों की जोड़ी का दाम पच्चीस पैसे हैं। इस बात पर उसे बड़ी ही खुशी हुई कि जिन चप्पलों का दाम कम से कम दस रुपये होने चाहिये थे, वे इतने सस्ते दाम पर बेचे जा रहे हैं। इन चप्पलों में से आकर्षक दीखनेवाले चप्पलों को उसने चुन लिया और उनमें पाँव रखकर देख लिया। आकार, रंग व नाप के हिसाब से वे उसे बिल्कुल ठीक लगे।

चंद्रभानु ने जेब में से पच्चीस पैसे निकाले और दुकानदार को देने ही वाला था कि उसने संदेह-भरी दृष्टि से देखा और कहा "ये चप्पल आपके नहीं हैं। ये तो कपड़ों की दुकान के मालिक पराशुरजी के हैं। जहाँ तक मुझे मालुम है, आपने यहाँ चप्पल नहीं छोड़े।"

इतने में पराशुर वहाँ आया और चंद्रभानु पर नाराज होते हुए कहा "दिन दहाड़े चोरी, वह भी मंदिर के सामने।"

चंद्रभानु ने फ़ौरन चप्पलों से अपने पैर हटा लिये और कहा "महाशय, मैं चोर नहीं हूँ। इस तख़्ते को देखिये। इसपर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा हुआ है कि चप्पलों की जोड़ी का दाम पच्चीस पैसे हैं। अगर लिखा हुआ होता कि चप्पलों की जोड़ी के लिए पच्चीस पैसे देने होंगे तो यह भूल मुझसे नहीं होती। अधिक शिक्षित न होने के कारण ऐसी गड़बड़ी होती है।"

पराशुर ने जल्दी-जल्दी चप्पल पहन लिये और कहने लगा "हाँ, हाँ, जो अधिक शिक्षित नहीं होते, उनके कारण गड़बड़ी होती ही है। पर पढ़े-लिखे होने के बावजूद पच्चीस पैसों में चप्पल खरीदने की जो मंशा रखते हैं, उनके कारण गड़बड़ी बहुत ज़्यादा होती है।" कहता हुआ वहाँ से चला गया।

-सीताराम मिश्र

अमावस्या के भूत

कोमल और सुकमारी की नयी-नयी शादी हुई। कोमल के माँ-बाप उसके बचपन में ही गुज़र चुके थे। उसकी दादी ने ही उसे पाला-पोसा था, पर वह उसकी शादी देखे बिना ही मर गयी। दादी से उसे दस एकड़ का उपजाऊ खेत मिला, जिसकी आमदनी से वह मज़े से दिन काट रहा था।

सुकुमारी अपने पारिवारिक जीवन से बहुत ही संतुष्ट थी। उसपर किसी तरह का बोझ अथवा दबाव नहीं था। वह एकदम बंधन-मुक्त थी। बग़ल के घर में किराये पर रहने मंथरा आयी। सुकुमारी का हरा-भरा परिवार उससे देखा न गया। उसने जान-बूझकर पति-पत्नी के बीच मननुटाव पैदा करने का बीड़ा उठाया।

"तेरा पति तो कोई नौकरी नहीं कर रहा है। खेती-बाड़ी का काम भी किसी और को सौंपा है। कम से कम रसोई के काम में हाथ बंटा सकता है न।" कहती रहती थी मंथरा।

"मेरी समझ में नहीं आता, तुम्हारे पति ने तुम्हारे साथ ऐसा अन्याय क्यों किया ?शादी हुए एक साल हो गया, परंतु न ही सोने की चूड़ियाँ बनवायीं, न ही बालियाँ। मुझे तो लगता है कि तुम्हारा पति तुम्हें चाहता ही नहीं।" कहती रहती थी मंथरा सुकुमारी से, जो हर त्योहार पर मोतियों की माला मात्र पहनती रहती थी।

"तुम्हारे पिता दहेज देने की स्थिति में नहीं थे, इसीलिए कोमल से तुम्हारी शादी हुई। नहीं तो तुम जैसी सुंदर कन्या से बड़ा ज़मींदार न सही, छोटा-मोटा ज़मींदार ही सही, शादी करने तैयार हो जाता।" कपडे धोकर उन्हें सुखाती हुई सुकुमारी से मंथरा कहती रहती।

सुकुमारी, मंथरा की बातों में आ गयी।

दीपा जकली
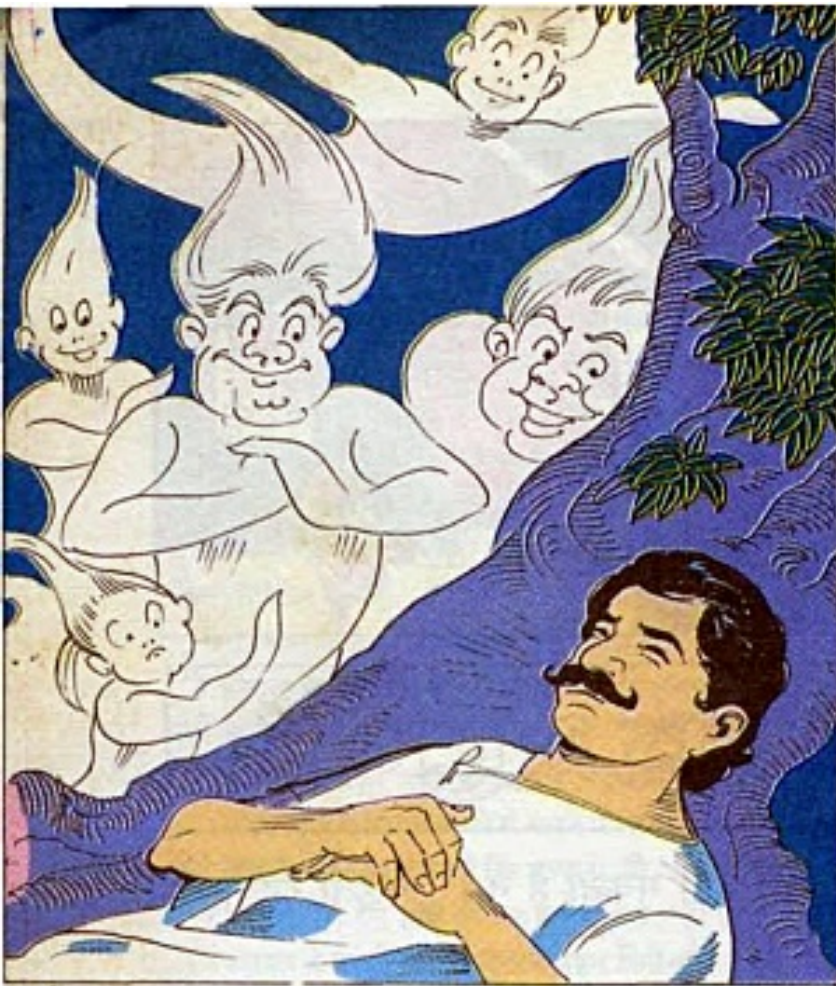
उसकी बातों का बहुत असर पड़ा उसपर। वह इतनी अक़्लमंद नहीं थी कि मंथरा की बातों का गूढ़ार्थ समझ पाये। इसलिए बात-बात पर वह कोमल से झगड़ा मोल लेने लगी और मुँह में जा आया, कहती जाने लगी। उसकी दृष्टि में अपने पति का मूल्य घटते जाने लगा।

एक दिन रात को उसे मंथरा की बातें बार-बार याद आती रहीं, जिससे वह सो नहीं पायी। कोमल खर्राटे लेता हुआ आराम से सो रहा था।

नाराज़ सुकुमारी ने उसे जगाया और कहा "तुम खर्राटे इतने ज़ोर से क्यों लेते हो। मुझे नींद नहीं आती। क्या कहीं और चली जाऊँ ?"

आधी रात को पत्नी के इस आरोप से कोमल बिगड़ गया और कहा "औरत हो। अंधेरे में कहाँ जा पाओगी। मैं ही खुद चला जाऊँगा।" कहकर वह घर से बाहर आ गया।

कोमल को अपनी पत्नी का यह झगड़ालू स्वभाव बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। वह इसपर दुखी होता हुआ गाँव की सरहदों को पार करके जंगल में बहुत दूर तक चला आया। अमावस की वजह से अंधेरा ही अंधेरा छाया हुआ था। कोमल गाँव लौटने की सोच ही रहा था कि इतने में उसने देखा कि एक बरगद के पेड़ के नीचे मशालें जल रही हैं और वहाँ अच्छा-खासा प्रकाश है। वह उस ओर बढ़ा।

बरगद के पेड़ के नीचे मशालों की कांति में चार भूत किसी विनोद कार्यक्रम में मस्त थे। चुड़ैल पत्नी के भय के सामने भूतों की क्या गिनती, ऐसा सोचकर धीरज बाँधे कोमल और आगे बढ़ा।

वहाँ भूतों का नायक किकियाने सुर में कहने लगा "तुम सब सावधानी से सुनो। हम चारों में से जो बाक़ी तीनों को खूब हँसायेगा, उसे एक अद्भुत पुरस्कार मिलेगा।"

कुछ ही क्षणों में एक भूत ने कोई गाना गाया। एक और भूत अपने लंबे पाँवों को फैलाता और उड़ाता हुआ गाता रहा। एक और भूत ने एक हास्य कथा सुनायी।

भूतों के इस विनोद कार्यक्रम में कोमल को कोई खास मज़ा नहीं आया। नींद उसपर हावी हो रही थी, इसलिए वह जंभाई लेता हुआ, पास ही के एक बरगद पेड़ से सटकर बैठ गया और सो गया। उसने तुरंत खर्राटे

भरना शुरु कर दिया।

उस ध्वनि पर, क्षण भर के लिए, भूत अवाक् रह गये, पर उन्होंने जब इधर-इधर झांका तो खरटि लेते हुए कोमल को देखा। वे धीरे-धीरे वहाँ पहुँचे। खरटि लेते समय कोमल की घनी मूँछें ऊपर-नीचे हिल रही थीं। मटके के आकार का उसका पेट तथा सीटी की तरह बजती हुई उसकी साँस की आवाज़ को सुनकर भूतों को बहुत हँसी आयी।

भूतों की हँसी से कोमल जाग उठा। भूतों के नायक ने उससे कहा "हर अमावस की रात को हम भूत एक विनोद कार्यक्रम का प्रबंध करते हैं। आज के इस कार्यक्रम के तुम्हीं विजेता हो। हम सबों को तुमने खूब हँसाया।" कहते हुए उसने एक काली टोपी उसके सिर पर रखी। फिर सबके सब भूत गायब हो गये।

पत्नी के प्रति कोमल का क्रोध अब थोड़ा-बहुत शांत हो गया। वह घर लौटने निकल पड़ा। घर पहुँचने-पहुँचते सबेरा हो गया। उस समय सुकुमारी घर के सामने रंगोली सजा रही थी। कोमल को देखकर वह चुप ही रही, लेकिन मन ही मन सोच ही रही थी कि रात को अपने मूर्खता-भरे व्यबहार के लिए कैसे क्षमा-याचना माँगू।

"अरी ओ पगली, शत्रु व दोस्तों के बीच क्षमा-याचना के लिए स्थान है, किन्तु पति-पत्नी के बीच उसका कोई स्थान नहीं।" कोमल ने कहा।

सुकुमारी को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उसके मन की बात पति ने कैसे ताड़ ली।

कोमल ने कहा "मुझे भी इस बात का

आश्चर्य है कि मैं तुम्हारे मन की बात कैसे समझ पाया।"

सुकुमारी मन ही मन कहने लगी कि सिर पर यह भद्दी काली टोपी कैसी? कोमल ने उसके मन की यह बात भी जान ली और सिर पर से टोपी निकाल दी। उसे निकाल देनें के बाद वह पत्नी के मन की बात समझ नहीं पा रहा था। अब उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि यह भूतों की दी हुई अद्भुत भेंट है। बहुत ही खुश होते हुए उसने पत्नी को सब कुछ बताया, जो जंगल में हुआ था।

सुकुमारी ने क्षण भर सोचने के बाद कोमल से कहा "देखो, ऐसी अद्भुत टोपी की ज़रूरत हमें क्या है? राजा को भेंट में दे आना। कहते हैं कि वे बुद्धु हैं। इतना भी नहीं जानते कि कौन दुश्मन है और कौन

चटाई पर उडेलीं और कहा "सुकुमारी, क्या करें इतना धन ? सलाह दो।" सुकुमारी ने कहा "व्यापार-पद्धति से परिचित अपने दोस्तों से सलाहें लो। कोई व्यापार शुरु करो। किसी व्यापार में लग जाओगे तो मटका जैसा तुम्हारा पेट घट जायेगा। साथ ही खर्राटे की आदत भी छूट जायेगी।" कोमल को पत्नी की सलाह सही लगी।

इतने में एक महीने के पहले अपनी बहन की शादी पर गयी मंथरा लौट आयी। सुकुमारी के परिवर्तित भाग्य को देखकर स्तब्ध रह गयी। अपने बुद्धि-बल व चतुराई का उपयोग करके उससे अमावस के भूतों का रहस्य जान ही लिया।

उसी दिन रात को उसने अपने पति भीरु को, कोमल के भाग्य का किस्सा सुनाया और कहा "आज अमावस है। तुम भी जंगल जाओ और कोमल की तरह खर्राटे ले लेकर भूतों को संतुष्ट करो। फिर उनसे ऐसी टोपी न माँगना, जिसे सिर पर रखने से दूसरों के मन की बात मालूम हो जाए बल्कि ऐसी टोपी माँगना, जिसे सिर पर रखते ही गायब हो जाएँ, किसी को दिखायी न पड़ें। उसे लेकर सीधे राजधानी जाओ और अदृश्य रूप में राजा के खज़ाने की क़ीमती चीज़ों को लूटकर ले आओ। रानी हफ़्ते के हर दिन अलग-अलग आभूषण पहनती है। उन सातों आभूषणों को लाना भूलना मत।"

भीरु का चेहरा उतर गया। उसने कहा "मुझे खर्राटे लेना नहीं आता।"

मंथरा नाराज़ होती हुई बोली "मनुष्य के लिए कोई भी काम असंभव नहीं। बस,

दोस्त। यह टोपी उनके उपयोग में आयेगी।"

"वाह वाह सुकुमारी, तुममें जो राजभक्ति है, वह दूसरों में भी होती तो कितना अच्छा होता। राजा जासूसों और अंगरक्षकों पर जो भारी खर्चा कर रहे हैं, उसकी ज़रूरत नहीं पड़ती।" वह उसी क्षण जाकर राजा से मिला। उसने राजा को टोपी की महिमा बतायी और लौटने के लिए मुड़ा।

राजा ने कोमल को रुकने का आदेश दिया और कहा "शाबाश कोमल, तुम्हारी राजभक्ति अद्‌भुत है। तुम्हारी भेंट अमूल्यवान है। मुझसे भेंट लिये बिना जाना उचित नहीं है।" तभी उसने कोषाधिकारी को बुलाया और कोमल को थैली भर की अशर्फ़ियाँ दिलवायीं।

घर लौटे कोमल ने थैली में से अशर्फ़ियाँ

उसे प्रयत्न करते रहना चाहिये। जाओ और तुम भी प्रयत्न करो। तुम ज़रूर कामयाब हो जाओगे।''

भीरु, मंथरा के कहे मुताबिक जंगल में गया। पेड़ के पीछे से उसने चारों भूतों को देखा। वह भय से थरथर काँपने लगा और एकदम चिल्ला पड़ा। दूसरे ही क्षण चारों भूत वहाँ आ धमके और उसे घेरकर कहा ''अरे ओ निकम्मे, यहाँ आकर, चिल्लाकर तुमने हमारे विनोद का भंग किया।'' वे उसे गुर्राकर देखने लगे।

भीरु और डरते हुए बोला ''वह चिल्लाहट नहीं थी, खर्राटा था।'' उसके जवाब पर वे भूत ठठाकर हँस पड़े। भूतों के नायक ने उसकी तारीफ़ करते हुए कहा ''तुम तो बड़े हँसोड़ हो। किन्तु बताना, अमावस के इस अंधेरे में यहाँ क्यों चले आये?''

अब भी भूतों से भयभीत भीरु ने हड़बड़ाते हुए कहा ''अदृश्य पोटी प्राप्त करने।''

उसकी इस बात से भूत पहले चकित हुए। फिर ठठाकर हँस पड़े। उनके सरदार ने भीरु की पीठ थपथपाते हुए कहा ''वाह, कैसा वाक् चातुर्य। तुम तो जन्म से ही हँसोड़ लगते हो। मानव, अब बताओ, यह पोटी क्या है ?''

तब तक भीरु निर्भीक हो गया। उसने कहा ''मेरा मतलब टोपी से है। टोपी, अदृश्य टोपी।''

''अच्छा, यह बात है'' कहते हुए सरदार ने हवा में हाथ चलाया। एक सफ़ेद टोपी उसके हाथ में आयी। उसने वह टोपी भीरु के सिर पर रखी और कहा ''अरे ओ इन्सान, हमें

बहुत हँसाया। दूसरी अमावस की रात को फिर आना।'' कहते हुए चारों चमगीदड़ों के रूप में बदल गये और हवा में उड़कर चले गये।

भीरु बहुत ही आनंदित होता हुआ वहाँ से निकला। सुबह तक राजा के क़िले में पहुँचा। अपनी टोपी की महिमा के कारण सिपाहियों की आँखों के सामने से ही वह गुज़रा और राजा के ख़ज़ाने में प्रवेश किया।

वहाँ के ढ़ेर के ढ़ेर रत्न, मणियाँ, अशर्फ़ियाँ पड़ी हुई थीं। उन सबको उसने एक बोरे में डाल लिया और अपने कंधे पर लादता हुए अंत:पुर में पहुँचा।

वहाँ राजा और रानी अलग-अलग शय्या पर सो रहे थे। वे गाढ़ी निद्रा में थे। कमरे के एक कोने में मेज़ पर रानी के सातों दिनों के आभूषण रखे हुए थे। साथ ही राजा का

मुकुट भी था। भीरु ने उन गहनों को भी बोरे में डाल लिया और जाते-जाते सोचने लगा "मंथरा की अक़्ल की वजह से इतने गहने मिले। जब उसके पास रानी के आभूषण हों तब मेरे सिर पर राजा का मुकुट न हो तो अच्छा नहीं लगेगा, यह कमी ही महसूस होगी।" ऐसा सोचकर उसने मुकुट लिया और उसे अदृश्य टोपी पर दबाकर रख लिया और बड़े शान से बाहर आया।

आदत न होने की वजह से उसे लगा कि मुकुट बहुत भारी है, तो उसने मुकुट निकालकर अपने हाथ में रख लिया। जब वह क़िले के द्वार से गुज़रने लगा तो सैनिकों ने देख लिया और चिल्लाते हुए कहा "अरे, तेरी ऐसी हिम्मत। राजा का मुकुट चुराकर ले जा रहे हो।" फिर उसे पकड़ लिया और बाँधकर उसे राजा के पास ले गये।

भीरु थरथर काँपने लगा। अब वह जान गया कि जब उसने मुकुट सिर से निकाल दिया तब उसके साथ-साथ अदृश्य टोपी भी बाहर आ गयी। वह रोने लगा और मन ही मन पत्नी मंथरा को गालियाँ देने लगा।

राजा, भीरु का रुख देखते हुए समझ गया कि इसके दुत्साहस के पीछे किसी का हाथ है। उसने कोमल की दी हूई टोपी सिर पर रख ली। वह असली रहस्य जान गया। उसे मालूम हो गया कि भीरु अपनी पत्नी को अपने आप गालियाँ दे रहा है।

राजा ने तुरंत सैनिकों को भेजकर मंथरा को अपने समक्ष बुलवाया। कड़े स्वर में उससे पूछा तो उसकी दुराशा और दुर्बुद्धि का पर्दाफाश हो गया। राजा ने आज्ञा दी कि जैसे हैं, वैसी ही स्थिति में वे राज्य को छोड़कर चले जाएँ।

विवरण जानने के बाद सुकुमारी ने कोमल से कहा "उस अमावस भूतों की दया से हमारा परिवार सुव्यवस्थित हो गया। मंथरा हमेशा तुम्हारे बारे में विष घोलती रही और मेरे मन को कलुषित कर दिया।"

कोमल ने सिर हिलाते हुए कहा "देखो सुकुमारी, ऐरे-गैरे जब बोलते हैं तब उनका विश्वास करना नहीं चाहिये। अविवेक नामक ये भूत जब तक हममें बसते हैं तब तक मंथरा नहीं तो कोई और चुगली खाते ही रहते हैं। ज़रूरी तो यह है कि हम हमेशा सावधान रहें।"

कारण

रघुनंदन मिश्रा अग्रहार के और दूसरे निवासियों से अधिक धनी था। पंद्रह एकड़ों की उपजाऊ ज़मीन थी। दो एकड़ों में व्याप्त आम का बग़ीचा था। उसकी एक ही लड़की थी -रुक्मिणी।

रुक्मिणी अब जवान हो गयी। मिश्रा अपनी बेटी के विवाह की तैयारियों में लग गया। उसके लिए वर ढूँढने लगा। उसकी इच्छा थी कि ऐसे युवक से अपनी बेटी की शादी रचाऊँ, जिसने शास्त्रों व काव्यों का अध्ययन किया। साथ ही सुँदर भी हो। उसे घर-जँवाई बनाकर अपने यहाँ ले आने का उसका इरादा भी था।

रघुनंदन मिश्रा को जैसे युवक की ज़रूरत थी, वैसे युवक मुश्किल से दो-तीन मिले। किन्तु उनमें से कोई घर-जँवाई बनकर आने के लिये तैयार नहीं था। इन परिस्थितियों में जब रुक्मिणी अपनी माँ के साथ एक रिश्तेदार के यहाँ शादी पर गयी थी तब वहाँ श्रीकांत नामक एक युवक से उसका परिचय हुआ। सबका कहना है कि यद्यपि श्रीकांत धनी नहीं है, पर है, पंडित और लौकिक।

रुक्मिणी की माँ जान गयी कि उसकी बेटी श्रीकांत को चाहने लगी है, तो पहले वह बेहद खुश हुई। पर जब घर-जँवाई की बात याद आयी तो बहुत ही निराश हुई। फिर भी उसने सोचा कि श्रीनाथ से पूछ ही लें। धीरज बाँधकर उसने पूछा भी कि पढ़ाई क्या खतम हो गयी ? जीविका चलाने के लिए आगे क्या करने का इरादा है ?

श्रीकांत ने फ़ौरन उत्तर दिया "मेरे पिताजी मेरे लिये दो एकड़ की उपजाऊ भूमि छोड़ गये हैं। उससे आमदनी होती है, पर वह पर्याप्त नहीं है। और आमदनी

बिमल पटनायक

नितांत आवश्यक है । सब लोग मुझे सलाह दे रहे हैं कि मैं कोई गुरुकुल प्रारंभ करूँ । मैं भी यही करने की सोच रहा हूँ ।''

उसका उत्तर सुनकर रुक्मिणी की माँ ने गहरी साँस ली और कहा ''तुम तो जानते ही हो कि हम तुम्हारे बहुत दूर के रिश्तेदार हैं । रिश्तेदारी तो रिश्तेदारी ही होती है, चाहे वह नज़दीक की हो या दूर की । मेरे पति मान जाएँ तो मैं तुम्हें अपना दामाद बनाना चाहती हूँ । तुमने तो मेरी बेटी रुक्मिणी को देखा ही होगा ।''

श्रीकांत हँसता हूआ बोला ''रुक्मिणी को देख लिया । उसके पिता तो संपन्न व्यक्ति हैं । उन्हें तो चाहिए - घर-जँवाई । चूंकि आप मेरे दूर के रिश्तेदार हैं, इसलिए मैं ऐसे युवक को ढूँढूँगा । शायद कहीं मिल जाए ।''

इस घटना के घटे एक महीना हो गया । पत्नी और पुत्री रुक्मिणी ने जिद पकड़ी कि विवाह हो तो श्रीकांत से ही हो । रघुनंदन मिश्रा ने झक मारकर बड़े वैभव के साथ रुक्मिणी की शादी श्रीकांत से करायी । पर उसके हृदय में आग सुलग रही थी कि जिस दामाद ने घर-जँवाई बनने से स्पष्ट तिरस्कार कर दिया, उसे सबों के सामने किसी न किसी तरह अपमानित करूँ । उसको लगा कि ऐसा करने पर ही उसके हृदय की अग्नि बुझेगी।

शादी के चार महीनों के बाद दीपावली त्योहार के अवसर पर श्रीकांत अपनी पत्नी समेत ससुराल आया । एक दिन सायंकाल मंदिर के मंडप में कुछ लोग गपशप कर रहे थे । रघुनंदन मिश्रा भी वहाँ उपस्थित था । उस समय श्रीकांत भी वहाँ आया ।

रघुनंदन मिश्रा ने वहाँ उपस्थित लोगों से अपने दामाद का परिचय कराते हुए
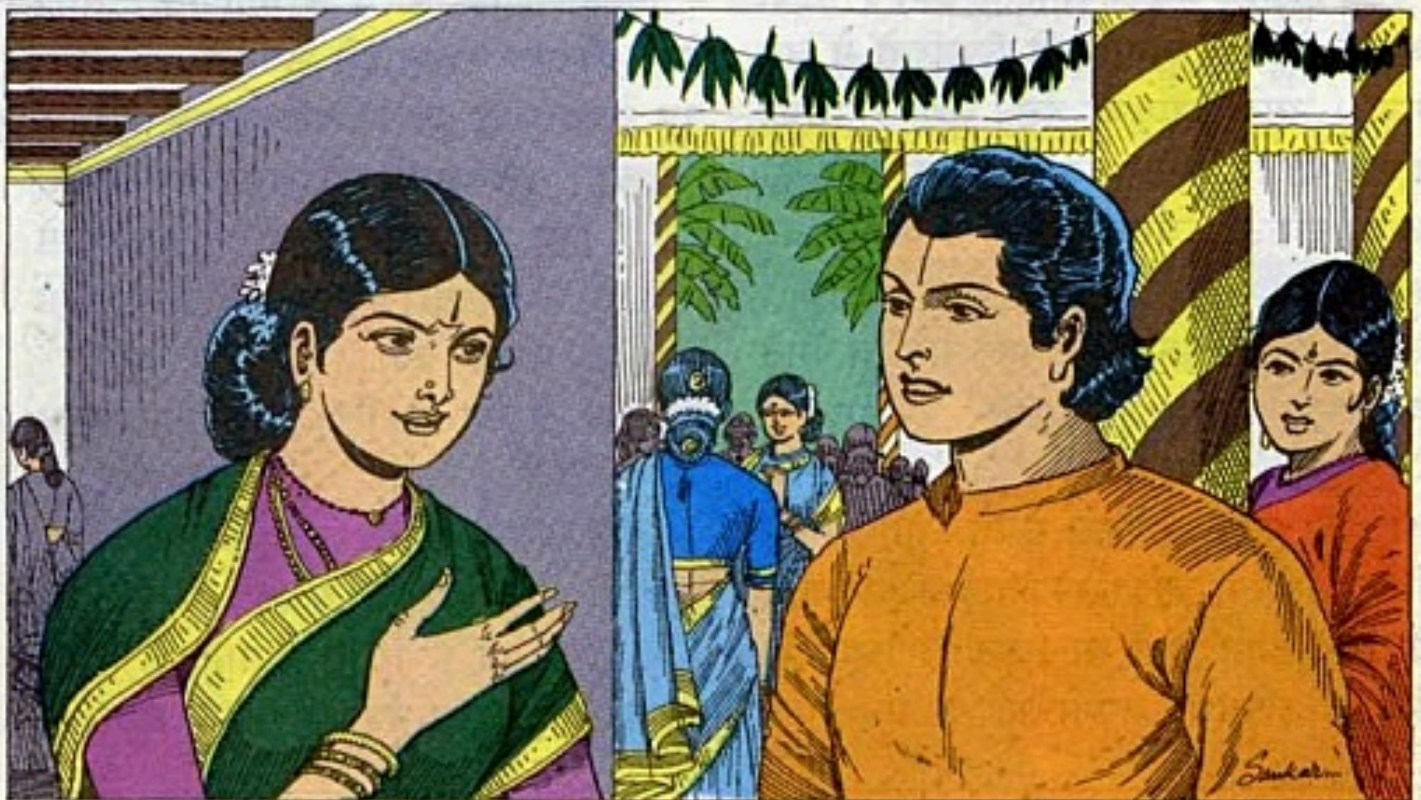
कहा "सब कहते हैं कि मेरा दामाद विद्यावान है, विवेकी है । मैं यह जानता भी हूँ । पर आप सबों की उपस्थिति में मेरा विचार है, यह सत्य प्रमाणित हो ।" फिर श्रीकांत की और मुड़कर कहा "सब जानते हैं कि तुम विद्यावान हो । मेरे कुछ सवालों का जवाब दो । सवाल यों हैं : कभी-कभी बगुले झुंड के झुंड आकाश में उड़ते हुए बड़े मधुर स्वर में चिल्लाते जाते हैं । क्यों ?"

"उन्हें यह प्रकृति की देन है" श्रीकांत ने कहा । "नीम व इमली के पेड़ वसंतऋतु में पल्लवित होते हैं । इसका क्या कारण है?" मिश्रा ने प्रश्न किया । "यह भी यह प्रकृति की देन है" श्रीकांत ने कहा । "रास्ते के दोनों ओर जो पेड़ होते हैं, उसके तनों में गाँठ के रूप में इस आकार के गुमटे होते हैं । इसका क्या कारण है?" मिश्रा का प्रश्न था । "ये गुमटे भी प्रकृति के ही कारण बने हैं" श्रीकांत का जवाब था । इस उत्तर पर मिश्रा ने हँस दिया और कहा "विद्या-हीन मनुष्य भी मेरे प्रश्न का उत्तर दे पायेगा । यह आश्चर्य की बात है कि तुम सही जवाब नहीं दे पाये । बगुलों की चिल्लाहट मधुर होती है, क्योंकि उनकी गरदनें लंबी होती हैं । नीम व इमली के पेड़ आदि वसंतऋतु में पल्लवित होते हैं । इसका कारण है-उनकी जड़ें भूमि में बड़ी गहराई तक फैली हुई होती हैं । सड़क के दोनों और जो पेड़ होते हैं, उनके तनों में तीखे गुमटे होते हैं, जिसका कारण है - पशु अपने सींगों से तनों को रगड़ते रहते हैं । कारण ये हैं, पर तुम तो कह रहे हो कि सबका मूल प्रकृति है । तुम्हारे ये उत्तर मुझे बड़े विचित्र लग रहे हैं ।"

तब श्रीकांत ने कहा "मेंढक टरटराते हैं, उनकी गरदनें लंबी होती हैं, क्या इस कारण वे टरटराते हैं ? बाँस के पेड़ वसंतऋतु में पल्लवित होते हैं । भूमि के तले उनकी जड़ें बहुत दूर तक फैली होती हैं, क्या इस कारण वे पल्लवित होते हैं ? ससुरजी, क्षमा करें तो पूछूँ? आपकी गरदन पर इतना बड़ा गुमटा है, इसका कारण क्या पशुओं के सींग हैं ?"

यह सुनकर सब हँस पड़े । रघुनंदन मिश्रा ने सिर झुका लिया ।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता : : पुरस्कार रु. १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, फ़रवरी, १९९७ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

MAHANTESH C. MORABAD

K. SUBBA RAO

* उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। * २० दिसंबर, ९६ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। * अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्ति को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। * दोनों परचियोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास - २६.

अक्तूबर, १९९६ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मुझे है पढ़ना, इसलिए हूँ मौन !**

दूसरा फोटो : **जल्दी बताओ, मैं हूँ कौन ?**

प्रेषक : **मीरा धीर**

१८२०, झालाना हौस, जयलाल मुंशी का तीसरा चौराहा, पुरानी बस्ती, जयपुर-३०२ ००१.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चंदा : रु. ७२/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process private Ltd., 188, N.S.K. Salai, Madras - 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras - 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.